वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 82 मंगलवार 1 सितम्बर 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मेजर ध्यानचंद की जयंती पर शासन सचिवालय में खेलों का उत्साह, कर्मचारियों ने दिखाया दमखम

शासन सचिवालय में गूंजा खेलों का उत्साह, विभिन्न प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों ने लिया हिस्सा

रस्साकशी से नींबू दौड़ तक हुआ आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

राष्ट्रीय खेल दिवस-2026 के अवसर पर 'हॉकी के जादूगर' मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में शासन सचिवालय, जयपुर में विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्मिक विभाग, शासन सचिवालय की ओर से आयोजित इन प्रतियोगिताओं में अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा खेल भावना और टीमवर्क का परिचय दिया। आयोजन के दौरान नींबू दौड़, रूमाल झपट्टा और रस्साकशी सहित विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया। खेल गतिविधियों के दौरान खिलाड़ियों के बीच रोमांचक मुकाबले देखने को मिले और प्रतिभागियों ने अपनी शारीरिक क्षमता, चुस्ती और सामूहिक समन्वय का प्रदर्शन किया। रस्साकशी प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में टीम 'गौरव सैनानी' ने विजेता का खिताब हासिल किया। महिला वर्ग में टीम 'कस्तूरबा गांधी' ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार रूमाल झपट्टा प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में टीम 'सुखदेव' विजेता रही, जबकि महिला वर्ग में टीम 'विजय लक्ष्मी' ने बाजी मारी। नींबू दौड़ के पुरुष वर्ग में टीम 'तात्या टोपे' और महिला वर्ग में टीम 'रानी लक्ष्मीबाई' ने विजेता का खिताब अपने नाम किया। प्रतियोगिताओं के दौरान प्रतिभागियों ने उत्साह और खेल भावना के साथ अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

प्रतिभागियों को टी-शर्ट और अल्पाहार वितरित

आयोजन में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को टी-शर्ट एवं अल्पाहार वितरित किया गया। इससे प्रतिभागियों में खासा उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम के दौरान मेजर ध्यानचंद के खेल योगदान और देश में खेलों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में उनके योगदान को भी स्मरण किया गया। कार्मिक विभाग, शासन सचिवालय के वरिष्ठ खेल अधिकारी तथा कार्मिक के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सभी विजेता टीमों और प्रतिभागियों को उनके प्रदर्शन के लिए बधाई दी। उन्होंने सफल आयोजन के लिए खिलाड़ियों एवं आयोजन से जुड़े सभी कार्मिकों को शुभकामनाएं दीं।

आयोजन का उद्देश्य कर्मचारियों को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उनमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, अनुशासन और टीम भावना को बढ़ावा देना रहा।

जेन जी और जेन अल्फा ने कृष्ण भक्ति से जोड़ा नाता

गुप्त वृंदावन धाम में जन्माष्टमी कार्निवल का भव्य समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया

जगतपुरा स्थित गुप्त वृंदावन धाम में आयोजित तीन दिवसीय श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्निवल का सोमवार को भक्ति, संगीत, नृत्य और भारतीय संस्कृति के रंगों के साथ भव्य समापन हुआ। समापन समारोह में जयपुर के विभिन्न विद्यालयों से सैकड़ों बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चे भगवान श्रीकृष्ण और राधारानी के स्वरूप में सजकर मंदिर पहुंचे, जबकि उनके माता-पिता नंद बाबा और यशोदा मैया के स्वरूप में कार्यक्रम में सहभागी बने। मंदिर अध्यक्ष अमितासन दास प्रभु ने बताया कि गुप्त वृंदावन धाम केवल मंदिर ही नहीं, बल्कि एक प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र भी है, जहां बच्चों, युवाओं और परिवारों को भारतीय संस्कृति एवं भक्ति से जोड़ने के लिए नियमित रूप से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्होंने कहा कि जेन जी और जेन अल्फा को भक्ति एवं भारतीय संस्कृति से जोड़ना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। समारोह में बच्चों ने भरतनाट्यम, कथक, सोलो और ग्रुप डांस, मंत्रोच्चारण, भजन तथा भजन जामिंग सहित विभिन्न प्रस्तुतियां दीं। जयपुर के प्रसिद्ध नालंदा कला केंद्र के बच्चों ने भरतनाट्यम की शानदार प्रस्तुति दी। वहीं आईसीवीके के विद्यार्थियों ने भी अपनी प्रस्तुतियों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। भजन जामिंग में आराध्या चंदा, आराध्या शर्मा, साक्षी चंदा, प्रिंजल गुप्ता, अद्रिशा पारीक यादव, हूर्वी शर्मा, एकांगिका शर्मा, अग्रिमा पारीक, अनिका बरनवाल, तोषिका जोशी, मानवी सिंह, दिशिका यादव, गीतिका सिंह, मोक्ष लोहारिया, निधिश्री और आरोही जैन ने गायन किया। वाद्य यंत्रों पर अगस्त्य सांखला, माधव शर्मा, यथार्थ जैन, भाव्या जैन, आरव खत्री और आयुष सैनी ने संगत की। कार्यक्रम में परमेष्ठी वर्मा ने भरतनाट्यम और प्रियंका सिंह

ने कथक की मनमोहक प्रस्तुति दी। तीन दिवसीय कार्निवल में बच्चों, युवाओं और परिवारों की उत्साहपूर्ण सहभागिता ने पूरे गुप्त वृंदावन धाम को भक्ति और संस्कृति के रंग में रंग दिया। आयोजन ने यह संदेश दिया कि जब नई पीढ़ी कृष्ण भक्ति, संगीत, नृत्य और भारतीय संस्कृति से जुड़ती है, तो संस्कारों की परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक और अधिक मजबूती से पहुंचती है।

मिशन हरित इंदिरा गांधी नगर के तहत एस-4 ने किया वृक्षारोपण

जयपुर. शाबाश इंडिया। मिशन हरित इंदिरा गांधी नगर के तहत सर्व समाज सेवा समिति (एस-4), इंदिरा गांधी नगर की ओर से सेक्टर-3 के विभिन्न पार्कों और ग्रीन बेल्ट में वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। इस दौरान लोगों को निःशुल्क पौधे भी वितरित किए गए। समिति के डॉ. अशोक दुबे ने बताया कि अभियान के लिए विभिन्न प्रजातियों के पौधों का चयन किया गया है, ताकि पर्यावरण संरक्षण के साथ इनके अन्य उपयोगी महत्व को भी बढ़ावा मिले। कुछ वृक्ष फल एवं पोषण प्रदान करते हैं, कुछ औषधीय महत्व रखते हैं, जबकि कुछ छाया, सुंदरता और पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वस्थ एवं सुंदर पर्यावरण के लिए विविध प्रजातियों के वृक्षों का रोपण आवश्यक है। सेक्टर-3 स्थित ओंकारेश्वर महादेव मंदिर परिसर में कदंब का पौधा लगाया गया। भारतीय संस्कृति और धार्मिक परंपराओं में कदंब का विशेष महत्व है। वहीं, पार्क के अन्य हिस्से में आकर्षक नीले-बैंगनी फूलों वाले नीलमोहर का पौधा रोपित किया गया। अभियान में दम्मी लाल, नरेश शर्मा, मनीराम, संदीप बानूड़ा, हंसराज मीणा, विवेक शर्मा, अवध शर्मा, रामचंद्र सैनी, राजेश भट्ट, राहुल शर्मा, शिवांग, राजेंद्र उपाध्याय, कैलाश कौशिक, सुरेश शर्मा, विनोद शर्मा और डॉ. अशोक दुबे का सहयोग रहा।

खोया हुआ विश्वास आचरण एवं व्यवहार से लौटता है: मुनि श्रमण सागर जी

राघौगढ़. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन आचार्य एवं इस सदी के महान संत आचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, तपस्वी बुंदेली महाकवि मुनि श्रमण सागर जी महाराज ने श्रमण धारा प्रवचन माला में ''खोया विश्वास कैसे लौटे'' विषय पर मंगल प्रवचन दिया। मुनि श्री ने कहा कि प्रेम, श्रद्धा, वैराग्य, विश्वास, भक्ति और समर्पण जैसे शब्द छोटे जरूर हैं, लेकिन इनका प्रभाव बहुत व्यापक है। इन भावों को जबरन प्राप्त नहीं किया जा सकता। धन के बल पर भी खोया हुआ विश्वास वापस नहीं पाया जा सकता। विश्वास को अपने आचरण, व्यवहार और उचित प्रयासों से ही पुनः अर्जित किया जा सकता है। आचार्य विद्यासागर जी महाराज के प्रवचन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि

क्रोध पर नियंत्रण रखो, अन्यथा जिंदगी भर क्रोध के नियंत्रण में रहना पड़ेगा। वर्तमान समय में परिवारों में बढ़ते तनाव का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित होकर गलत कदम उठाने और हर बात की जानकारी रात-दिन मोबाइल के माध्यम से मायके पक्ष को देने से परिवारों में विश्वास कमजोर हो रहा है। विवाह के बाद बेटी को ससुराल को अपना घर मानकर परिवार का विश्वास जीतने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि क्रोध हमारा शत्रु है। क्रोध आने पर व्यक्ति भविष्य के परिणामों को भूल जाता है और अपना विश्वास खो बैठता है। उन्होंने क्रोध पर नियंत्रण रखने के उपाय भी बताए। मुनि श्रमण सागर जी महाराज प्रतिदिन प्रवचन में अपनी स्वरचित कविता भी सुनाते हैं। मंगलवार को उन्होंने राघौगढ़ में ही रची कविता ''अंतिम अवसर है, मत चूको, अभी नहीं तो कभी नहीं'' सुनाकर युवा पीढ़ी को जीवन में अवसरों का सदुपयोग कर सफलता की ओर बढ़ने का संदेश दिया। भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय संरक्षक एवं जैन समाज राघौगढ़ के मार्गदर्शक विजय कुमार जैन ने बताया कि चातुर्मास कर रहे मुनि श्रमण सागर जी एवं मुनि ओंकार सागर जी महाराज के दर्शन एवं आशीर्वाद लेने के लिए जैन समाज गुना के अध्यक्ष संजय जैन कामनी सहित कमेटी के पदाधिकारी, जैन समाज कुंभराज के नवनिर्वाचित अध्यक्ष विवेक जैन विक्की सहित नवगठित कमेटी के सदस्य पहुंचे। इसके अलावा छतरपुर, सागर, गंजबासौदा, विदिशा एवं महाराष्ट्र से भी श्रद्धालु पहुंचे। सभी ने महाराज श्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। बाहर से आए अतिथियों का जैन समाज राघौगढ़ की ओर से सम्मान किया गया।

महावीर पब्लिक स्कूल में 13वीं अंतर्विद्यालयी कथक नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन 1 सितंबर को

जयपुर. शाबाश इंडिया। महावीर पब्लिक स्कूल की ओर से 1 सितंबर 2026, मंगलवार को प्रातः 8:30 बजे महावीर सभा भवन में 13वीं अंतर्विद्यालयी कथक नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रवि जैन (आईएएस), सचिव, स्थानीय स्वायत्त शासन विभाग एवं आयुक्त, निदेशालय स्थानीय निकाय, राजस्थान सरकार, जयपुर होंगे। प्रतियोगिता में करीब 14 विद्यालयों के कथक कलाकार भाग लेंगे और अपनी नृत्य प्रस्तुतियां देंगे। कार्यक्रम में प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना श्रीमती मनस्विनी शर्मा द्वारा विशेष प्रस्तुति भी दी जाएगी।

जनकपुरी जैन पाठशाला के बच्चों ने आचार्य श्री आदित्य सागर जी से लिया आशीर्वाद

श्रीपाल-मैना सुन्दरी की कथा पर विद्यार्थियों ने दिए प्रश्नों के उत्तर

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनकपुरी जैन मंदिर परिसर में रविवार को आयोजित धर्मसभा के बाद जनकपुरी जैन पाठशाला के विद्यार्थियों ने आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज के कक्ष में जाकर उनके दर्शन किए और आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर बच्चों में विशेष उत्साह और धार्मिक संस्कारों के प्रति श्रद्धा देखने को मिली। पाठशाला के विद्यार्थियों ने श्रीपालझमैना सुन्दरी की कथा से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देकर अपनी धार्मिक जानकारी का परिचय दिया। बच्चों द्वारा उत्साहपूर्वक दिए गए उत्तरों की आचार्य श्री ने सराहना की। उन्होंने बच्चों को धर्म के साथ-साथ संस्कारों और सदाचार को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। धर्मसभा में रविवार को आचार्य श्री ने आचार्य समन्तभद्र विरचित 'रत्नकरंड श्रावकाचार' के माध्यम से सोलहकारण भावनाओं का महत्व समझाया। उन्होंने प्रथम भावना 'दर्शन विशुद्धि भावना' की व्याख्या करते हुए कहा कि सम्यक दर्शन की निर्मलता और शुद्धता आध्यात्मिक उन्नति का महत्वपूर्ण आधार है। श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री के प्रवचन का लाभ लेकर धर्मलाभ प्राप्त किया। आचार्य श्री आदित्य सागर जी महाराज ने पाठशाला के बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें उपहार भी प्रदान किए। उपहार पाकर बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

वायरल फीवर

प्रमुख वायरल संक्रमण और उनके सामान्य लक्षण

संक्रमण	प्रमुख लक्षण
सामान्य वायरल श्वसन संक्रमण	बुखार, नाक बहना, गले में खराश, खांसी आदि
इन्फ्लुएंजा	अचानक तेज बुखार, बदन दर्द, सिरदर्द, खांसी आदि
कोविड-19	बुखार, खांसी, गले में खराश, थकान आदि
डेंगू	तेज बुखार, सिरदर्द, शरीर में दर्द, कभी-कभी दाने
वायरल गैस्ट्रोएन्टराइटिस	बुखार के साथ उल्टी या दस्त
वायरल हेपेटाइटिस	बुखार, कमजोरी, भूख कम लगना, पीलिया आदि

वायरल फीवर कोई एक बीमारी नहीं, बल्कि विभिन्न वायरस से होने वाले संक्रमणों के कारण आने वाला बुखार है। संक्रमण से लड़ते समय शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली तापमान बढ़ा सकती है। सर्दी-जुकाम, इन्फ्लुएंजा, कोविड-19, डेंगू और कुछ अन्य वायरल संक्रमणों में बुखार हो सकता है। इसलिए केवल बुखार के आधार पर यह तय नहीं किया जा सकता कि संक्रमण किस वायरस के कारण है।

सामान्य लक्षण

बुखार, ठंड लगना या कंपकंपी होना। सिरदर्द। शरीर या मांसपेशियों में दर्द। कमजोरी और थकान। गले में खराश। नाक बहना या बंद होना। खांसी। भूख कम लगना या खाने में अरुचि। कभी-कभी मतली, उल्टी या दस्त। कुछ वायरल रोगों में त्वचा पर दाने भी उभर सकते हैं। उदाहरण के लिए, इन्फ्लुएंजा में अचानक बुखार, सूखी खांसी, सिरदर्द, गले में खराश तथा मांसपेशियों या जोड़ों में दर्द होना आम है।

कारण और संक्रमण कैसे फैलता है?

वायरल फीवर अलग-अलग वायरस के कारण हो सकता है। वायरस के अनुसार संक्रमण फैलने का तरीका भी अलग हो सकता है: संक्रमित व्यक्ति की खांसी या छींक से निकलने वाली बूंदों अथवा कणों के माध्यम से। संक्रमित व्यक्ति के बहुत निकट संपर्क में रहने से। दूषित हाथों या सतहों को छूने से। दूषित भोजन या पानी से होने वाले कुछ वायरल संक्रमणों के माध्यम से। मच्छरों जैसे वाहकों से फैलने वाले कुछ वायरल रोगों के माध्यम से।

वायरल फीवर की पहचान कैसे करें?

सिर्फ लक्षणों के आधार पर वायरल संक्रमण का पक्का निदान नहीं किया जा सकता। डॉक्टर बीमारी की अवधि, बुखार का स्वरूप, आसपास संक्रमण की स्थिति और अन्य लक्षणों को देखते हुए आवश्यकता के अनुसार जांच की सलाह दे सकते हैं। विशेषकर भारत में बुखार के साथ डेंगू, मलेरिया, टाइफाइड, इन्फ्लुएंजा और कोविड-19 जैसी स्थितियों में लक्षणों तथा स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर सही पहचान करना महत्वपूर्ण है।

कौन-कौन सी जांच हो सकती हैं?

जांच बीमारी के संभावित कारण और मरीज की स्थिति के अनुसार की जाती है:

सीबीसी: रक्त कोशिकाओं की स्थिति जानने के लिए। संक्रमण के अनुसार एंटीजन, एंटीबॉडी या अन्य संबंधित परीक्षण। डेंगू के लिए बीमारी के चरण के अनुसार उपयुक्त जांच। मलेरिया के लिए रक्त परीक्षण आदि। आवश्यकता पड़ने पर लिवर फंक्शन, किडनी फंक्शन तथा अन्य जांच। सिर्फ सीबीसी के आधार पर यह निश्चित नहीं किया जा सकता कि बुखार वायरल है।

सावधानी और बचाव

पर्याप्त मात्रा में पानी और तरल पदार्थ लें तथा पर्याप्त आराम करें। हाथों को नियमित रूप से साबुन और पानी से साफ करें। खांसते या छींकते समय मुंह और नाक को ढकें। बीमारी के दौरान दूसरों से अनावश्यक निकट संपर्क से बचें। कमरे में उचित वेंटिलेशन रखें। डेंगू और अन्य मच्छरजनित रोगों के मौसम में मच्छरों से बचाव करें। डॉक्टर की सलाह के बिना कोई भी दवा न लें।

होम्योपैथिक उपचार के बारे में

होम्योपैथी में वायरल फीवर के दौरान ब्रायोनिया, जेल्सीमियम, यूपेटोरियम पर्फोलेटम, रस टॉक्स, बेलाडोना और एकोनाइट जैसी दवाओं का उपयोग किया जाता है। हालांकि, किसी विशेष दवा का सेवन केवल लक्षणों के आधार पर स्वयं करना उचित नहीं है। ऐसी दवाएं योग्य एवं पंजीकृत होम्योपैथिक चिकित्सक की सलाह से ही ली जानी चाहिए। वायरल संक्रमणों के उपचार में होम्योपैथी की प्रभावशीलता के पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण सीमित हैं। इसलिए डेंगू, इन्फ्लुएंजा, कोविड-19 या किसी अन्य गंभीर संक्रमण में होम्योपैथी को आवश्यक चिकित्सकीय जांच और प्रमाणित उपचार का विकल्प नहीं माना जाना चाहिए। आवश्यकता होने पर संबंधित विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए।

तुरंत चिकित्सकीय सलाह कब लें?

बहुत तेज या लगातार बुखार, सांस लेने में कठिनाई, अत्यधिक सुस्ती या भ्रम, लगातार उल्टी, शरीर में पानी की कमी, असामान्य रक्तस्राव या नील पड़ना, तेज पेट दर्द, दौरे पड़ना अथवा हालत तेजी से बिगड़ने पर तुरंत चिकित्सकीय सहायता लें। वायरल फीवर में मुख्य आधार सही पहचान, पर्याप्त आराम, पर्याप्त तरल पदार्थ और लक्षणों के अनुसार उचित चिकित्सा है। बुखार को केवल 'वायरल' मानकर लंबे समय तक स्वयं उपचार करना उचित नहीं है।

डॉ. एम.एल. जैन 'मणि'
एम.ए., बी.एच.एम.एस. (होम्योपैथिक), पीएच.डी.
अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ होम्योपैथ एवं पूर्व शैक्षणिक सदस्य, होम्योपैथिक विश्वविद्यालय, जयपुर
मोबाइल: 8949032693

इस विटामिन की कमी से हाथ लगते हैं कांपने?

बढ़ती उम्र में हाथ-पैर कांपने की समस्या देखने को मिल सकती है, लेकिन कम उम्र में शरीर में इस तरह की अनैच्छिक गतिविधियां दिखाई दें तो इसके कारणों पर ध्यान देना जरूरी है। हाथ कांपने के पीछे कई कारण हो सकते हैं। इनमें पोषण की कमी के अलावा तनाव, अधिक थकान, कम ब्लड शुगर, कुछ दवाओं का प्रभाव और अन्य स्वास्थ्य संबंधी कारण भी शामिल हो सकते हैं। विटामिन बी12 की कमी से तंत्रिका तंत्र प्रभावित हो सकता है, जबकि विटामिन डी की कमी के भी कई स्वास्थ्य प्रभाव हो सकते हैं। हालांकि, केवल हाथ कांपने को इन विटामिनों की कमी का निश्चित संकेत नहीं माना जा सकता। ऐसे में संतुलित और पौष्टिक आहार लेना महत्वपूर्ण है। यदि लगातार हाथ कांपते हैं या समस्या बढ़ रही है तो चिकित्सकीय परामर्श लेकर आवश्यक जांच करवानी चाहिए।

1. ओट्स और ब्रोकली: ओट्स फाइबर से भरपूर खाद्य पदार्थ है, जबकि ब्रोकली में फोलेट समेत कई पोषक तत्व पाए जाते हैं। इन्हें नियमित संतुलित आहार का हिस्सा बनाया जा सकता है। हालांकि, ये विटामिन बी12 के प्रमुख प्राकृतिक स्रोत नहीं हैं।

2. मशरूम और डेयरी उत्पाद: मशरूम में विभिन्न पोषक तत्व पाए जाते हैं। कुछ प्रकार के मशरूम विटामिन ड के स्रोत हो सकते हैं। दूध, दही और पनीर जैसे डेयरी उत्पाद भी पोषण की दृष्टि से उपयोगी हैं। इनके पोषक तत्व उत्पाद के प्रकार और फोर्टिफिकेशन पर निर्भर करते हैं।

3. धूप और अंडे: शरीर सूर्य की रोशनी के संपर्क में आने पर विटामिन ड बना सकता है। इसके अलावा अंडे की जर्दी में विटामिन ड और इ12 सहित कई पोषक तत्व पाए जाते हैं। दो बड़े पके हुए अंडों में लगभग 1.5 माइक्रोग्राम विटामिन इ12 हो सकता है।

किस उम्र में कितने विटामिन बी12 की आवश्यकता?

सामान्य दैनिक आवश्यकता इस प्रकार बताई जाती है:

0-6 महीने:	**0.4 माइक्रोग्राम**
7-12 महीने:	**0.5 माइक्रोग्राम**
1-3 वर्ष:	**0.9 माइक्रोग्राम**
4-8 वर्ष:	**1.2 माइक्रोग्राम**
9-13 वर्ष:	**1.8 माइक्रोग्राम**
14 वर्ष और अधिक:	**2.4 माइक्रोग्राम**
गर्भवती महिलाएं:	**2.6 माइक्रोग्राम**
स्तनपान कराने वाली महिलाएं:	**2.8 माइक्रोग्राम**

विटामिन बी12 की कमी का जोखिम विशेष रूप से उन लोगों में अधिक हो सकता है जिनके आहार में पशु-आधारित खाद्य पदार्थ बहुत कम होते हैं।

आवश्यकता पड़ने पर डॉक्टर रक्त जांच के आधार पर सप्लीमेंट की सलाह दे सकते हैं। हाथ कांपना केवल विटामिन बी12 या डी की कमी के कारण नहीं होता। यदि कंपकंपी लगातार बनी रहती है, अचानक शुरू हुई है, या इसके साथ कमजोरी, बोलने में परेशानी, चलने में दिक्कत अथवा अन्य असामान्य लक्षण हैं, तो तुरंत चिकित्सकीय सलाह लें। यह लेख केवल सामान्य स्वास्थ्य जानकारी के लिए है। किसी भी विटामिन या सप्लीमेंट का सेवन डॉक्टर की सलाह के बिना न करें।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी: शासन सचिवालय, जयपुर

राजनीति

अंतरिक्ष जैसे अहम सेक्टर में निजीकरण पर विवाद

राजेश पांडेय

भारतीय अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्र तेजी से निजीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में लंबे समय तक निजी क्षेत्र की भूमिका सीमित रही, लेकिन अब इन्हें भी धीरे-धीरे खोला जा रहा है। इनमें अंतरिक्ष कार्यक्रम भी शामिल है। इस पर विवाद और सवाल उठने लगे हैं। जुलाई-अगस्त के दौरान भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) से बड़ी संख्या में वैज्ञानिकों के इस्तीफे और एक निजी कंपनी के अंतरिक्ष अभियान चर्चा में रहे। 23 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतरिक्ष दिवस के अवसर पर इसरो की तारीफ करते हुए कहा कि इसरो की सफलता से कई बच्चे वैज्ञानिक बनने के बारे में सोचेंगे। मोदी ने यह भी कहा कि भारत की निजी अंतरिक्ष प्रतिभा दुनिया में अपनी पहचान बना रही है। लेकिन उसी दिन इसरो के पूर्व प्रमुख माधवन नायर ने स्पेस सेक्टर के अत्यधिक निजीकरण के खिलाफ आगाह किया। माधवन नायर की आपत्ति कई कारणों से ध्यान खींचती है। उन्होंने अक्टूबर 2018 में गृहमंत्री अमित शाह की मौजूदगी में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की थी। शायद उनसे पहले कोई जाना-माना स्पेस साइंटिस्ट भाजपा में नहीं आया था। उनका करिअर कामयाबी और शोहरत की ऊंची उड़ान से विवादों की गहराई में गोता लगाने की कहानी भी रहा है। वे 2003-04 से छह साल तक इसरो के प्रमुख रहे। इस दौरान देश के पहले चंद्र मिशन चंद्रयान-1 सहित 27 अभियान सफल हुए। उन्हें 2009 में मनमोहन सिंह की यूपीए सरकार ने देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्मविभूषण से अलंकृत किया था। लेकिन 2012 में सरकार ने टेलीकॉम स्पेक्ट्रम से संबंधित एंट्रिक्स-देवास करार में कथित घोटाले के आरोपों के बाद किसी भी सरकारी संगठन में नायर की नियुक्ति पर प्रतिबंध लगा दिया। यह पाबंदी लागू है। नायर ने निजी कंपनियों को प्रक्षेपण केंद्रों का काम सौंपने के प्रस्ताव का कड़ा विरोध किया है। वे पहले भी इसरो की कमजोरियों को सामने रख चुके हैं। जब संगठन से तीन वर्षों में कई वैज्ञानिकों ने इस्तीफा दिया था, तब 2017 में उन्होंने नए प्रोजेक्ट, इनोवेशन और किसी भावी परिकल्पना के अभाव को इसका कारण बताया था। इस स्थिति में अब तक अपेक्षित सुधार नहीं हुआ है।

संपादकीय

हिमालय पर मंडरा रही जलप्रलय की आशंका

नेपाल में आई बाढ़ से हुई तबाही सिर्फ जानमाल के तात्कालिक नुकसान की भयावह तस्वीर नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए गंभीर चेतावनी भी है। अमेरिकी भूगर्भीय सर्वेक्षण के आकलन के अनुसार, यह आपदा सीधे भूकम्प से नहीं, बल्कि तिब्बत के पर्वतीय क्षेत्र में हिमनद और चट्टानों के खिसकने से बनी झील के टूटने के कारण आई। 7,245 मीटर ऊंची लांगटांग लिरुंग चोटी के उत्तरी हिस्से में हिमस्खलन हुआ। वैज्ञानिकों का मानना है कि

बढ़ते वैश्विक तापमान से हिमनद तेजी से पिघल रहे हैं। इससे नई हिमनद झीलें बन रही हैं और पुरानी झीलों का आकार बढ़ रहा है। नेपाल की त्रासदी बताती है कि जलवायु परिवर्तन का असर उच्च हिमालयी क्षेत्रों में तेजी से दिखाई दे रहा है। जिस हिमनद के टूटने से जलप्रलय आया, वह करीब 17 हजार फुट की ऊंचाई पर था। इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट और नेपाली वैज्ञानिकों के आकलन में इस क्षेत्र में 47 खतरनाक हिमनद झीलों की पहचान हुई है। इनमें 21 नेपाल में और बाकी तिब्बत के सीमावर्ती क्षेत्रों में हैं। ये झीलें उन नदियों के उद्गम क्षेत्रों में स्थित हैं, जो दक्षिण की ओर नेपाल में बहती हैं। इनके टूटने पर निचले क्षेत्रों में भारी तबाही हो सकती है। भारत के संदर्भ में भी तस्वीर चिंताजनक है। इसरो और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अध्ययनों के अनुसार, भारतीय हिमालयी क्षेत्र में 7,500 से अधिक हिमनद झीलें हैं, जिनमें 189 को रेड जोन में चिह्नित किया गया है। इनके फटने से उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में अचानक बाढ़ का खतरा पैदा हो सकता है। लद्दाख में 3,219 ऐसी झीलों की पहचान की गई है। उपग्रह तस्वीरों के अध्ययन में हिमाचल प्रदेश की गेफांग घाटी झील का क्षेत्रफल 178 फीसदी बढ़कर 101.3 हेक्टेयर होने की बात सामने आई है। हालांकि कुछ झीलों का आकार घट रहा है, लेकिन तेजी से बढ़ती झीलों की संख्या चिंता का विषय है। हिमालयी क्षेत्र में करीब 10 लाख लोग हिमनद झीलों के 20-30 किमी के दायरे में रहते हैं। संयुक्त राष्ट्र के अध्ययन चेताते रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन के कारण दक्षिण एशिया में बाढ़ की घटनाएं बढ़ सकती हैं। वैश्विक तापमान में वृद्धि अब आम लोगों की सुरक्षा से जुड़ा संकट है। इस संकट का संबंध केवल हिमालय तक सीमित नहीं है। महासागर और अंटार्कटिका भी जलवायु परिवर्तन की मार झेल रहे हैं। मानव गतिविधियों से उत्सर्जित कार्बन डाइऑक्साइड का हिस्सा समुद्रों में समा रहा है। दक्षिण महासागर की कार्बन डाइऑक्साइड सोखने की क्षमता घटने की चेतावनियां भी सामने आई हैं। इससे वायुमंडलीय तापमान बढ़ने का खतरा और गंभीर हो सकता है। हिमालय पर काले कार्बन का बढ़ता जमाव भी बर्फ पिघलने की रफ्तार बढ़ा रहा है। वाडिया हिमालयी भूविज्ञान संस्थान के अध्ययनों में हिमखंडों पर काले कार्बन की बढ़ती मात्रा दर्ज की गई है। उत्तराखंड अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र के अध्ययन के अनुसार, पिछले 37 वर्षों में हिमाच्छादित क्षेत्रफल में 26 वर्ग किमी की कमी आई है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

पुस्तकें ज्ञानियों की समाधि हैं...

पुस्तकें केवल ज्ञान का भंडार नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाली शक्ति हैं। अच्छी पुस्तक मनुष्य की मौन गुरु बनकर उसकी सोच, संस्कार और जीवन-दृष्टि को बदल देती है। मनुष्य के जीवन में भोजन और जल जितने आवश्यक हैं, ज्ञान और विचार भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। भोजन शरीर का पोषण करता है, जबकि ज्ञान मन और बुद्धि का विकास करता है। पुस्तक लेखक और विचारक की आत्मा का निवास-स्थान होती है। इस कृति का मूल संदेश स्पष्ट है कि पुस्तक स्वयं ज्ञान नहीं, बल्कि ज्ञान तक पहुंचने का प्रभावशाली माध्यम है। कागज पर अंकित शब्द तभी जीवंत होते हैं, जब पाठक उन्हें समझकर अपने चिंतन और व्यवहार का हिस्सा बनाता है। पुस्तक में पुस्तकों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को स्वीकार किया गया है। श्रेष्ठ साहित्य मनुष्य को सन्मार्ग की ओर ले जा सकता है, जबकि भ्रामक साहित्य उसकी सोच को गलत दिशा में प्रभावित कर सकता है। इसलिए पुस्तक का चयन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसका अध्ययन। पुस्तक अमृत भी हो सकती है और विष भी। वह मशाल की तरह प्रकाश दे सकती है, लेकिन गलत विचारों के हाथ में पड़कर आग भी लगा सकती है। रामायण, महाभारत, गीता, धम्मपद, पंचतंत्र, चाणक्य नीति और विभिन्न धर्मग्रंथ बताते हैं कि समय और पीढ़ियां बदलती हैं, लेकिन महान विचार जीवित रहते हैं। इसी अर्थ में पुस्तकें ज्ञानियों की समाधि हैं। उनके पन्नों में महापुरुषों का चिंतन सुरक्षित रहता है। पुस्तक अतीत और वर्तमान के बीच जीवंत सेतु बनकर ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाती है। विचारों के संघर्ष में पुस्तक को अस्त्र मानने का विचार भी उल्लेखनीय है। शिक्षा, सामाजिक सुधार, धार्मिक चेतना और जागरण के अनेक आंदोलनों में पुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्राचीन काल में ज्ञान मौखिक परंपरा से आगे बढ़ता था। बाद में ज्ञान को लिखित रूप में सुरक्षित करने की आवश्यकता महसूस हुई। ताड़पत्र, भोजपत्र, वस्त्र, चमड़ा और बाद में कागज जैसे माध्यमों से ज्ञान को स्थायी रूप दिया गया। आचार्य हरिभद्र सूरि, कुमारपाल तथा वस्तुपाल-तेजपाल जैसे ज्ञानाराधकों के प्रसंग बताते हैं कि पुस्तक निर्माण के पीछे तप, श्रम और ज्ञान के प्रति गहरी श्रद्धा जुड़ी थी। ज्ञान की आराधना केवल पूजा तक सीमित नहीं होनी चाहिए। स्वाध्याय, ज्ञानियों का सम्मान, पुस्तकों का लेखन, प्रकाशन और वितरण भी ज्ञान-साधना के महत्वपूर्ण रूप हैं। पुस्तकालय इस संस्कृति को समाज तक पहुंचाने वाली महत्वपूर्ण संस्था हैं। डिजिटल युग में सूचना मोबाइल और इंटरनेट पर सहज उपलब्ध है, फिर भी पुस्तक की आवश्यकता समाप्त नहीं हुई। सूचना हमें किसी विषय के बारे में बताती है, जबकि गंभीर अध्ययन उसे समझने, परखने और जीवन से जोड़ने की क्षमता विकसित करता है। समग्र रूप से यह कृति पुस्तक-प्रेम का साधारण गुणगान नहीं, बल्कि पुस्तक और मनुष्य के संबंध का दार्शनिक, ऐतिहासिक और व्यावहारिक विवेचन प्रस्तुत करती है। बच्चों और युवाओं में अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करना व्यक्तित्व निर्माण के लिए आवश्यक है। अंततः पुस्तक का मूल्य उसके पन्नों, जिल्द या कीमत में नहीं, बल्कि उस परिवर्तन में है जो वह पाठक के भीतर पैदा करती है। यदि पढ़ने से विचार परिष्कृत हों, विवेक जागे, व्यवहार में संयम आए और जीवन को बेहतर दिशा मिले, तभी पुस्तक का उद्देश्य पूरा होता है। इसलिए पुस्तक मनुष्य की मौन सहयात्री, चिंतन की मार्गदर्शक और व्यक्तित्व-विकास की आधारशिला है।

|| आचार्य श्री १०८ विद्यासागराय नमः||

|| देवाधिदेव श्री १००८ आदिनाथाय नमः||

|| मुनिपुंगव श्री १०८ सुधासागराय नमः||

संतशिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं
परम पूज्य निर्यापक मुनि पुंगवश्री 108 सुधासागरजी महाराज
की प्रेरणा से संस्थापित

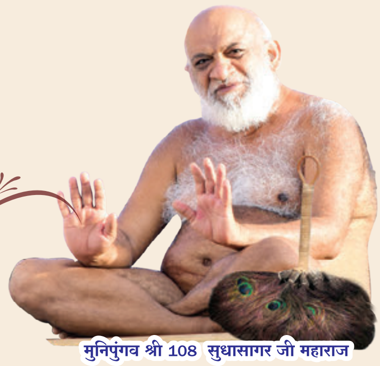

मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान

31 वाँ स्थापना दिवस एवं नवीनीकृत कार्यालयों का लोकार्पण समारोह

दिनांक 1 सितम्बर, 2026-मंगलवार
समय : प्रात: 8.30 बजे
स्थान : विद्यासुधा सभा मण्डप, संस्थान परिसर, वीरोदय नगर, सांगानेर, जयपुर

समारोह के मुख्य अतिथि एवं लोकार्पणकर्त्ता

जैन गौरव श्री अशोक जी सुशीला जी पाटनी

आर.के.मार्बल्स, मदनंगज-किशनगढ़ (राज.)

आप सादर आमंत्रित है।

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर, जयपुर (राज.)
प्रबन्धकारिणी समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण

स्वस्ति श्री सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शुभाशीष
एवं
महातपो-मार्तण्ड, निर्यापक श्रमण पूज्य मुनिपुंगव
श्री सुधासागर जी महाराज के सदुपदेश से संस्थापित / संचालित
इस संस्थान के भूतल स्थित कक्षों का
नवीनीकरण दानवीरों के उत्कृष्ट दान से किया गया।

गुरु कक्ष

श्रीमती हीरा देवी जी, श्रीमान् नंदकिशोर जी शान्ता देवी जी,
महावीर प्रसाद जी शशि जी एवं
समस्त पहाड़िया परिवार, बनीपार्क, जयपुर।

दीर्घा परिसर (दक्षिण पश्चिमी)

स्वर्गीय श्री श्रीपाल जी एवं श्री विजय जी कटारिया की पुण्य स्मृति में श्रीमती विजया देवी जी,
अजय जी माया जी, श्रीमती अनिता जी, संजय जी मीनाक्षी जी, राज जी रिद्दि जी,
पावन जी श्रेया जी, सोम जी, स्वस्तिका जी एवं समस्त कटारिया परिवार, हिम्मत नगर, जयपुर।

प्रबन्धकारिणी समिति कक्ष

श्रीमान् प्रमोद जी नीना जी, सुनील जी निशा जी,
अंकित जी इति जी, अक्षत जी अदिति जी,
आदविक जी, आन्या जी एवं समस्त पहाड़िया परिवार, बनीपार्क, जयपुर।

अधिष्ठाता / निदेशक कक्ष

स्वर्गीय श्री सम्पत जी पाण्ड्या की पुण्य स्मृति में श्रीमती जीवनी देवी, संजय जी चंचल जी,
अजय जी-प्रीति जी, सुमित जी प्राची जी, श्रेयांश जी, लवीना जी, अरिहान जी
एवं समस्त पाण्ड्या परिवार, श्री जैन रोडवेज, जयपुर।

प्राचार्य कक्ष

श्रीमान् पूनमचन्द जी पुष्पलता जी, रवि जी बरखा जी, सुश्री कृति जी,
नीता जी कमलकान्त जी बोहरा, श्रीमती प्राची जी पर्व जी जैन एवं
समस्त गोधा परिवार, जवाहर नगर, जयपुर।

लेखा-विभाग कक्ष

स्वर्गीय श्री मदन लाल जी एवं स्वर्गीय श्रीमती अनोप देवी जी पाटनी की पुण्य स्मृति में :
श्री अनिल -उर्मिला जी पाटनीश्रीमती शिवानी जी - अमित जी सेठी,श्रीमती शालिनी जी - राजल जी पहाड़िया
श्रीमती सलोनी जी - श्रीधर जी कयान एवं समस्त पाटनी परिवार,वशिष्ठ मार्ग,श्याम नगर, जयपुर।

द्वादशवर्षीय पाठ्यक्रम कक्ष

श्रीमान् नरेन्द्र जी-पुष्पा जी. सुरेश जी-ललिता जी, प्रदीप जी-मंजू जी,
अनिल जी-संजू जी एवं समस्त गोधा परिवार मंडाभीम सिंह, गुवाहाटी,
बगाईगांव, तिनसुकिया, गांधीधाम, जयपुर।

दशलक्षण एवं शिविर कक्ष

स्वर्गीय श्री चिरंजी लाल जी एवं श्रीमती धापू देवी जी पहाड़िया की पुण्य स्मृति में
राजकुमार जी चन्दा जी, यश जी अमानी जी, पायुका जी प्रतीक जी, भुविक जी जैन (इन्दौर),
निकिता जी अभिनव जी, कपिशा जी, विभूषा जी काला (जयपुर) एवं पहाड़िया परिवार, ब्यावर।

पाठशाला कक्ष

श्रीमान् पदमचंद जी शांति देवी जी धाकड़,
सीकर, चैन्नई, बैंगलौर।

शिक्षक कक्ष

स्वर्गीय श्री राजेन्द्र जी गोधा की पुण्य स्मृति में श्रीमती त्रिशला जी,
शैलेन्द्र जी प्रियंका जी, निशान्त जी, डोली जी, दिविक जी, वीया जी एवं
समस्त गोधा परिवार, समाचार जगत, जयपुर।

सन्त सुधा सागर अतिथि कक्ष

स्वर्गीय श्री भंवर लाल जी एवं स्वर्गीय श्रीमती चिंतामणि देवी जी सरावगी की पुण्य स्मृति में
श्री अशोक जी शोभा जी, किशोर जी सपना जी, मिहिर जी सोनिया जी,
अव्यान जी एवं समस्त सरावगी परिवार, श्यामनगर, जयपुर।

उपप्राचार्य कक्ष

श्री हजारीलाल जी एवं श्रीमती कंचन देवी जी गंगवाल
(जयपुर निवासी बैंगलोर प्रवासी) की पुण्य स्मृति में
श्री सुनील कुमार जैन, एर्नाकुलम, कोच्चि, केरलम्।

स्टूडियो कक्ष

स्वर्गीय श्री आत्मारामजी की पुण्य स्मृति में श्रीमती सरस्वती देवी,
राकेश जी स्वाति जी, कपिल जी-शेफाली जी,
अंशुल जी, ऋचा जी, विहाना जी, रमित जी एवं
समस्त नेकीवाला परिवार सी-स्कीम, जयपुर।

स्नातक परिषद कक्ष

स्वर्गीय श्री कपूरचंद जी पाटनी की पुण्य स्मृति में श्रीमती हीरामणी देवी जी,
राजेश जी डिंपल जी, सुनीता जी बसंत जी (जयपुर), बेला जी-हर्ष जी (गुवाहाटी),
अनुराधा जी अशोक जी (इम्फाल)
एवं समस्त पाटनी परिवार गुवाहाटी।

जल पान कक्ष

श्रीमती रतन लता लुहाड़िया, श्रीमती गुणमाला देवी जी.
विनोद जी (मोनू) रवीना जी. अरायना जी छाबड़ा,
श्रीमती संगीता जी-निर्मल जी रारा एवं
समस्त छाबड़ा परिवार, जयपुर।

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर, जयपुर (राज.)

प्रबन्धकारिणी समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण

शिरोमणि संरक्षक/ परामर्शक
जैन गौरव श्री अशोक पाटनी
मदनगंज-किशनगढ़

शिरोमणि संरक्षक / सह परामर्शक
श्री तरुण काला
मुम्बई

अधिष्ठाता
डॉ. जयकुमार जैन
मुजफ्फरनगर

निर्देशक
डॉ. शीतलचन्द जैन
जयपुर

अध्यक्ष
शांति कुमार जैन
(Retd. IPS)

कार्याध्यक्ष
प्रमोद जैन पहाड़िया

मानद मंत्री
सुरेश कुमार कासलीवाल

उपाध्यक्ष
उत्तम कुमार पाण्ड्या

उपाध्यक्ष
उत्तम चन्द पाटनी

उपाध्यक्ष
महावीर प्रसाद बज

उपाध्यक्ष
राकेश कुमार जैन

कोषाध्यक्ष
ऋषभ कुमार जैन

संयुक्त मंत्री
दर्शन कुमार जैन
(बस्सी वाले)

कार्यकारिणी सदस्यगण

ज्ञानचन्द झांझरी | राकेश कुमार नेकीवाला | प्रदीप कुमार लुहाड़िया | चन्द्रमोहन पहाड़िया | शैलेन्द्र कुमार गोधा
मोहित कुमार राणा | अजय कुमार कटारिया | दिनेश कुमार जैन | संजय कुमार पाण्ड्या | विनोद छाबड़ा 'मोनू'

विशेष आमंत्रित सदस्य

पं. अरुण कुमार जैन | विजय कुमार पहाड़िया
अजय गंगवाल | मुकेश कुमार बैनाड़ा | नरेन्द्र कुमार बज

सन्तश्री सुधासागर आवासीय कन्या महाविद्यालय समिति

परामर्शक
श्रीमती सुशीला पाटनी
श्रीमती शान्ता पाटनी

अध्यक्ष
श्रीमती रेणु राणा

अधिष्ठात्री
श्रीमती शीला जैन (डोड्या)

निर्देशिका
डॉ. वन्दना जैन

गौरवाध्यक्ष
श्रीमती तारिका पाटनी

अध्यक्ष
श्रीमती रेणु राणा

उपाध्यक्ष
श्रीमती नीना पहाड़िया

उपाध्यक्ष
श्रीमती रजनी काला

रूप आंखों को भाता है, मधुर वाणी हृदय में घर बनाती है : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

सिद्धितप की साधना में रत युवाचार्यश्री व साधु-साध्वीवृंद की श्रीसंघ ने सुखसाता पूछकर की तप की भावपूर्ण अनुमोदना

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

सौंदर्य केवल वह नहीं, जो आंखों को दिखाई दे, बल्कि सौंदर्य वह भी है, जो किसी के शब्दों के माध्यम से हृदय तक पहुंचे। आकर्षक चेहरा कुछ क्षणों के लिए प्रभावित कर सकता है, लेकिन कटु वाणी उसी आकर्षण को क्षणभर में फीका कर देती है। इसके विपरीत साधारण रूप वाला व्यक्ति भी यदि आत्मीयता से बोलता है तो उसकी उपस्थिति लंबे समय तक स्मृति में बनी रहती है। रूप मनुष्य का बाहरी परिचय है, जबकि वाणी उसके भीतर बसे संस्कारों को प्रकट करती है। ये विचार श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने शांतिभवन में आयोजित धर्मसभा में व्यक्त किए। उन्होंने वाणी और स्वर-सौंदर्य को व्यक्तित्व की वास्तविक संपदा बताते हुए कहा कि मधुर वाणी केवल आवाज की मधुरता नहीं, बल्कि निर्मल अंतःकरण की अभिव्यक्ति है। युवाचार्यश्री ने कहा कि शास्त्रों में परमात्मा के दिव्य रूप का जितना वर्णन मिलता है, उतना ही उनकी वाणी के अलौकिक प्रभाव का भी उल्लेख है। वीतराग प्रभु की देशना किसी एक भाषा या वर्ग तक सीमित नहीं थी। प्रत्येक जीव उसमें अपने अनुरूप भाव ग्रहण कर लेता था। जहां ऐसी वाणी प्रवाहित होती थी, वहां स्वभावतः विरोधी जीव भी वैर भूल जाते थे। इसका कारण शब्दों का कौशल नहीं, बल्कि उनके पीछे स्थित वीतराग चेतना थी। वाणी की ऊंचाई आवाज से नहीं, अंतःकरण की निर्मलता से तय होती है। स्थानांग सूत्र में वर्णित रूप और स्वर के भेद को समझाते हुए उन्होंने कहा कि प्रकृति भी मनुष्य को रूप और स्वर का अंतर समझाती है। कोई स्वर-संपन्न है, लेकिन रूप-संपन्न नहीं; कोई रूप से आकर्षक है, लेकिन स्वर में माधुर्य नहीं। किसी को दोनों प्राप्त हैं तो कोई दोनों से वंचित है। कोयल अपने रंग से नहीं, बल्कि स्वर से पहचानी जाती है। तोता रूप से आकर्षित कर सकता है, लेकिन उसकी सहज ध्वनि तीखी हो सकती है। मोर में रूप और स्वर दोनों का प्रभाव है, जबकि कौए की कर्कश आवाज थोड़ी देर में ही खटकने लगती है। उन्होंने कहा कि इन उदाहरणों में मनुष्य के लिए सीधा संदेश छिपा है। हम दर्पण में अपना चेहरा बार-बार देखते हैं, लेकिन अपने शब्दों का चेहरा बहुत कम देखते हैं। हम यह तो सोचते हैं कि सामने वाला हमें किस नजर से देख रहा है, लेकिन यह कम सोचते हैं कि हमारी वाणी उसके भीतर कैसी अनुभूति छोड़ रही है। रूप किसी को हमारे निकट ला सकता है, लेकिन संबंधों को टिकाए रखने का सामर्थ्य व्यवहार और शब्दों की आत्मीयता में होता है। युवाचार्यश्री ने कहा कि स्वर-सौंदर्य का अर्थ केवल मीठी आवाज नहीं है। आवाज में मधुरता हो, लेकिन भाव में छल हो तो उसका प्रभाव अधिक देर तक नहीं रहता। सच्ची मधुरता वहां जन्म लेती है, जहां हृदय में अपनापन, करुणा, सरलता और निष्कपटता हो। छोटे बच्चे की तुतलाती भाषा मां को इसलिए प्रिय लगती है कि उसमें व्याकरण नहीं, भाव की पवित्रता होती है। जहां हृदय निर्मल हो, वहां साधारण शब्द भी प्रार्थना जैसे लगते हैं। उन्होंने कहा कि वाणी मन की अवस्था को छिपा नहीं सकती। भीतर क्रोध बढ़ेगा तो शब्दों में ताप आएगा, मान बढ़ेगा तो स्वर में कठोरता आएगी, माया बढ़ेगी तो भाषा में बनावट आएगी और लोभ बढ़ेगा तो कथन में स्वार्थ प्रवेश करेगा। इसीलिए वाणी व्यक्ति के भीतर चल रहे भावों का सहज संकेत बन जाती है। मुंह से निकला कठोर शब्द क्षणभर का हो सकता है, लेकिन उसकी चोट वर्षों तक स्मृति में रह सकती है। आचार्य शिवमुनिजी महाराज से जुड़ा एक प्रसंग सुनाते हुए उन्होंने कहा कि एक बार भूलवश खीर गिर जाने पर कठोर डांट के स्थान पर करुणा से केवल इतना कहा गया, अरे भोला, यह क्या कर दिया तूने? शब्द सामान्य थे, लेकिन स्वर में

ऐसी आत्मीयता थी कि वर्षों बाद भी उसका स्मरण आंखों को नम कर देता था। यही वाणी की साधना है कि बात ऐसी कही जाए, जिससे भूल का बोध भी हो और व्यक्ति का सम्मान भी बना रहे। उन्होंने कहा कि मनुष्य अपने चेहरे को निखारने के लिए दर्पण, प्रसाधन और अनेक साधनों का सहारा लेता है, लेकिन अपनी वाणी को निखारने के लिए कितनी साधना करता है, यह अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है। चेहरे की कठोरता दिखाई देती है, मन की कठोरता नहीं; लेकिन वही कठोरता शब्दों में उतरकर संबंधों को घायल कर देती है। इसलिए साधना केवल शरीर या रूप को संयमित करने की नहीं, बल्कि स्वर, स्वभाव और संवेदना को परिष्कृत करने की भी है। रंग-रूप को लेकर बनने वाली हीनभावना पर युवाचार्यश्री ने कहा कि गोरा-काला, मोटा-पतला या बाहरी बनावट मनुष्य की श्रेष्ठता का मानदंड नहीं हो सकती। प्रकृति ने जो स्वरूप दिया है, उसे सहजता से स्वीकार कर स्वस्थ रखना चाहिए। दूसरों की टिप्पणी को अपने मूल्य का प्रमाणपत्र बना लेना उचित नहीं। दुनिया की दृष्टि बदलते देर नहीं लगती, इसलिए अपना आत्ममूल्य दूसरों की दृष्टि पर नहीं रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि कई बार हीनभावना मनुष्य के भीतर स्वयं पैदा नहीं होती, बल्कि बार-बार की गई टिप्पणियां उसे जन्म देती हैं। इसलिए हर कथन को अपने व्यक्तित्व का अंतिम निर्णय नहीं बनने देना चाहिए। स्वयं को कमतर मानना भी भूल है और स्वयं को इतना बड़ा मान लेना कि अहंकार पैदा हो जाए, यह भी भूल है। संतुलन यही है कि जो मिला है उसे स्वीकारें, जो सुधर सकता है उसे सुधारें और जो श्रेष्ठ है उसे सही दिशा में विकसित करें। स्वर के संतुलन को वाद्ययंत्र से जोड़ते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि तबला, पेटी या तार वाला कोई भी वाद्य उचित संतुलन के बिना मधुर नहीं बजता। तार बहुत ढीला हो तो स्वर नहीं निकलता और जरूरत से अधिक कस जाए तो ध्वनि बिगड़ जाती है। मनुष्य का अंतर्मन भी ऐसा ही वाद्य है। भीतर संतुलन होगा तो वाणी संगीत बनेगी और भीतर तनाव होगा तो वही वाणी शोर बन जाएगी। उन्होंने कहा कि आगम वाणी को केवल मधुर बनाने की नहीं, बल्कि सत्यनिष्ठ और जिम्मेदार बनाने की भी प्रेरणा देता है। जो देखा और जाना है, वही कहा जाए। संदेह को तथ्य बनाकर न फैलाया जाए। कथन स्पष्ट और पूर्ण हो तथा उसमें अनावश्यक उत्तेजना या अफवाह का मिश्रण न हो। अधूरी बात कई बार पूरे अर्थ को बदल देती है, जबकि अपुष्ट बात समाज में भ्रम का कारण बन सकती है। वाणी का संयम केवल कम बोलना नहीं, बल्कि सही बोलना भी है। बोलने को ऊर्जा का उपयोग बताते हुए उन्होंने कहा कि जिस प्रकार मोबाइल के प्रत्येक उपयोग में बैटरी खर्च होती है, उसी प्रकार प्रत्येक अनावश्यक शब्द हमारी मानसिक ऊर्जा को भी खर्च करता है। यदि ऊर्जा सीमित है तो उसे निंदा, अपुष्ट चर्चाओं और व्यर्थ विवादों में क्यों गंवाया जाए। शब्द वहां खर्च कीजिए, जहां किसी का भ्रम घटे, मन शांत हो और संबंधों में ऊष्मा बढ़े। उन्होंने बबूल का उदाहरण देते हुए कहा कि समझदार व्यक्ति उसके कांटे समेटकर साथ नहीं चलता। आवश्यकता हो तो उसकी छाया लेता है और आगे बढ़ जाता है। इसी प्रकार किसी व्यक्ति का एक दोष देखकर उसे बार-बार स्मरण और प्रचारित करते रहना अपने मन में कांटे जमा करने जैसा है। सामने वाला बदले या न बदले, निरंतर दोष-दर्शन से अपनी वाणी की शीतलता अवश्य नष्ट होने लगती है। अपने गुरु आनंद ऋषिजी का स्मरण करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि उनके व्यक्तित्व में रूप और स्वर दोनों की दिव्यता थी। स्वर में केवल ऊंचाई नहीं, वात्सल्य की गहराई थी। हजारों श्रोता आधुनिक ध्वनि साधनों के अभाव में भी उन्हें सुनते थे, क्योंकि उनके शब्द कानों तक रुकते नहीं थे, हृदय तक पहुंचते थे। सच्चे संत की वाणी का प्रभाव उसके स्वर-यंत्र में नहीं, बल्कि उसके अंतःकरण की करुणा में होता है। गुरुदेव के भजनों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि वे किसी को प्रभावित करने के लिए नहीं गाते थे, बल्कि स्वयं भाव में उतरकर गाते थे। यही कारण था कि स्वर साधारण होकर भी असाधारण अनुभूति देता था। राग सीख लेना अलग बात है और भाव में रम जाना अलग। तानसेन और उनके गुरु से जुड़े प्रसंग का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि बादशाह अकबर ने गुरु का गायन सुनकर तानसेन से पूछा कि तुम्हारे और उनके स्वर में इतना अंतर क्यों है। तानसेन का उत्तर था, मैं आपके लिए गाता हूं, वे परमात्मा के लिए गाते हैं। युवाचार्यश्री ने कहा कि यही प्रदर्शन और आराधना का अंतर है। जहां संसार को प्रभावित करने की इच्छा होती है, वहां कला रहती है; जहां परमात्मा में तल्लीनता होती है, वहां वही कला साधना बन जाती है। उन्होंने कहा कि जीवन का लक्ष्य केवल रूप-संपन्न होना नहीं, बल्कि स्वर-संपन्न और भाव-संपन्न होना भी है। चेहरे का सौंदर्य समय के साथ बदलता है, लेकिन करुणा से निकला एक शब्द वर्षों बाद भी जीवित रहता है। क्रोध, मान, माया और लोभ का ताप जितना घटेगा, वाणी उतनी ही निर्मल होगी। अंततः मनुष्य को लोग उसके चेहरे से कम और उसके शब्दों से अपने हृदय में छोड़ी गई अनुभूति से अधिक याद रखते हैं। इस अवसर पर तप आराधकों ने एक, तीन एवं पांच उपवास सहित विभिन्न तपों के प्रत्याख्यान युवाचार्यश्री से ग्रहण किए। शांतिभवन आनंद अनुभूति वर्षावास संयोजक कंवरलाल सूरिया, संरक्षक नवरतनमल बंब, अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद चीपड़, मदन लाल चौरड़िया, मंत्री नवरतनमल भलावत, सुशील चपलोत, प्रकाश पीपाड़ा, नरेंद्र भंडारी तथा शांति जैन महिला मंडल की सिम्मी पोखरणा, इंद्रा बापना, प्रमिला कोटिचा, कमला चौधरी, मंजू खटवड़, पुष्पा गौखरू एवं महावीर युवक मंडल के पदाधिकारियों और श्रद्धालुओं ने युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी, नवदीक्षित महक ऋषिजी, उपप्रवर्तिनी दिव्य ज्योतिजी, साध्वी रोचक दर्शनाजी एवं साध्वी सुबोधीजी आदि की सिद्धितप आराधना की सुखसाता पूछते हुए तप की अनुमोदना की। मंत्री नवरतनमल भलावत ने बताया कि 8 से 15 सितंबर तक पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के निमित्त शांतिभवन में प्रतिदिन प्रवचन, तप और धमार्राधना के साथ विविध आध्यात्मिक आयोजन होंगे। उन्होंने श्रावक-श्राविकाओं से अधिकाधिक संख्या में धर्मलाभ लेने का आग्रह किया।

प्रवक्ता : सुनील चपलोत
मोबाइल : 9414730514
शांतिभवन, भोपालगंज, भीलवाड़ा

स्वर लहरियों के बीच संगीतमय पारसनाथ अनुष्ठान में उमड़ा जनसैलाब

जिनालय में विश्व शांति की कामना को लेकर शांतिधारा करने वालों की मची धूम

पारसनाथ अनुष्ठान में मुख्य नायक सौधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य अशोक कुमार सिरस परिवार को मिला

निवाई. शाबाश इंडिया

श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर प्रांगण में जैन समाज की ओर से दिव्य तपस्वी आचार्य सुंदर सागर महाराज संघ के सान्निध्य में संगीतमय पारसनाथ मंडल विधान का आयोजन किया गया। इसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने पूजा-अर्चना कर पुण्यार्जन किया। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौंला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि विधान का शुभारंभ भगवान शांतिनाथ जी के समक्ष चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इसका सौभाग्य सौधर्म इंद्र अशोक कुमार, पारसमल, ललित कुमार एवं अभय कुमार जैन सिरस को मिला। मंगलाचरण का सौभाग्य ज्ञानादेवी, रेखा जैन, दिव्या जैन, अदिवा जैन, अर्णव जैन एवं मोक्ष जैन को प्राप्त हुआ। इस दौरान पारसनाथ मंडल विधान का आयोजन किया गया, जिसमें सौधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य अशोक कुमार सिरस परिवार को मिला। वहीं मुन्नादेवी सिरस, पारसमल जैन, कुसुम जैन, दीपक जैन, समता जैन, पदमचंद, मंजू जैन, अनिल कुमार मलारना, भागचंद कोटा, बेणी प्रसाद चंवरिया एवं अशोक कुमार सिरस परिवार को आचार्य सुंदर सागर महाराज संघ के विधिवत मंत्रोच्चार के साथ भगवान शांतिनाथ जी का अभिषेक एवं शांतिधारा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जैन समाज के प्रवक्ता राकेश संधी ने बताया कि विधान में भागचंद, शिखरचंद, राहुल जैन एवं आशीष जैन सिरस परिवार को पांच मंगल कलश स्थापित करने का सौभाग्य मिला। विधान के तहत रविवार को सौधर्म इंद्र अशोक सिरस परिवार को मंडप अनुष्ठान में श्रीफल समर्पित करने का अवसर प्राप्त हुआ। चातुर्मास कमेटी के प्रवक्ता विमल जौंला एवं हितेश छाबड़ा ने बताया कि इंदौर के अंकित एंड पार्टी के संगीतबद्ध भजनों पर श्रद्धालुओं ने जमकर भक्ति नृत्य किया। विधान में देव-शास्त्र-गुरु पूजन, शांतिनाथ भगवान की पूजा सहित पारसनाथ मंडल विधान की विशेष पूजा-अर्चना की गई। आचार्य सुंदर सागर महाराज, आर्यिका चिंतनमति माताजी, आर्यिका सुलक्ष्यमति माताजी, लब्धि दीदी, प्राप्ति दीदी एवं वंशिका दीदी ने पूजन संपन्न कराया। सौधर्म इंद्र परिवार सहित उपस्थित श्रद्धालुओं ने भगवान को श्रीफल समर्पित किए। समाज के प्रवक्ता विमल जौंला एवं राकेश संधी ने बताया कि शाम को संगीतमय आरती का आयोजन किया गया। इसमें गायक कलाकारों ने भजनों की प्रस्तुतियां देकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। इस अवसर पर हुकमचंद, पारसमल, संजय जैन प्रेस वाले, गुरुभक्त गोपाल लाल, शंभुकुमार कठमाणा परिवार, महावीर प्रसाद मेना जैन पराणा, दिलीप भाणजा, राजकुमार मित्रपुरा, कवि चंद्रेश जैन, शिखरचंद आशा जैन सिरस, नीरज माधोराजपुरा, अनिल पराणा, राजेंद्र बगड़ी, गिर्राज प्रसाद, महेश कुमार मोठूका, मुकेश बनेठा, सुनील बनेठा एवं त्रिलोक रजवास सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे। इस दौरान आचार्य श्री सुंदर सागर महाराज एवं आर्यिका सुलक्ष्यमति माताजी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्रद्धालुओं को धर्म और आध्यात्मिक साधना के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

रोटरी क्लब जयपुर स्पार्कल ने पौधरोपण कर पौधों की देखभाल का लिया संकल्प

जयपुर. शाबाश इंडिया। रोटरी क्लब जयपुर स्पार्कल की ओर से विद्याधर नगर क्षेत्र में पौधरोपण अभियान आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए गए। इस अवसर पर उपस्थित रोटेरियंस एवं नागरिकों ने लगाए गए पौधों के संरक्षण और नियमित देखभाल का संकल्प लिया। क्लब अध्यक्ष डॉ. राजीव जैन ने कहा कि पौधरोपण केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें वृक्ष बनने तक नियमित देखभाल और संरक्षण देना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण और भावी पीढ़ी के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के संयोजक राहुल एवं रंजना गोयल रहे। इस अवसर पर रोटेरियंस डॉ. मनीष जैन, राजेश वर्मा, लोकेश मकवाना, अमित मक्कड़, योगेंद्र सिंह, सुभाष गुप्ता एवं नवजोत सिंह सहित क्लब के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। पौधरोपण अभियान का आयोजन राजश्री सीड्स के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम में हरित क्षेत्र बढ़ाने, पर्यावरण संरक्षण तथा लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल पर विशेष जोर दिया गया। डॉ. राजीव जैन ने कहा कि हमारा लक्ष्य केवल पौधे लगाना नहीं, बल्कि उन्हें जीवित रखकर बड़े वृक्षों में परिवर्तित करना है। एक पौधा आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ हवा, छाया और बेहतर पर्यावरण की सौगात है।

जैन सोशल ग्रुप मानसरोवर ने दुर्गापुरा गौशाला में गायों को खिलाया गुड़ और चारा

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन सोशल ग्रुप मानसरोवर के सक्रिय कार्यकर्ता ज्ञानचंद जैन की पूज्य माताजी स्वर्गीय श्रीमती कंचन देवी जी की 34वीं पुण्यतिथि के अवसर पर ग्रुप के सहयोग से दुर्गापुरा गौशाला में गायों को गुड़ और चारा खिलाया गया। कार्यक्रम में ग्रुप के अध्यक्ष विनोद जैन शास्त्री, मंत्री सुनील कुमार जैन, सलाहकार सौभाग मल जैन, कोषाध्यक्ष अरुण जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष भागचंद जैन, डॉ. सुरेश जैन एवं देवेंद्र गंगवाल सहित अन्य सदस्यों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर मंत्री सुनील जैन ने ज्ञानचंद जैन का माला एवं तिलक लगाकर स्वागत किया। ग्रुप के सभी सदस्यों ने उनके सेवा कार्य की सराहना की। सलाहकार सौभाग मल जैन ने बताया कि ग्रुप में सभी सदस्य वरिष्ठ नागरिक हैं और शाकाहारी एवं धार्मिक आस्थाओं से जुड़े हुए हैं। ग्रुप की ओर से समय-समय पर धार्मिक यात्राएं, साधु-संतों के दर्शन, विभिन्न तीर्थ क्षेत्रों में पूजा-विधान तथा सामाजिक सरोकार से जुड़े सेवा कार्य किए जाते हैं। उन्होंने बताया कि ग्रुप द्वारा जरूरतमंद लोगों को भोजन उपलब्ध कराने, रक्तदान शिविर आयोजित करने, पशु-पक्षियों के लिए चारा एवं चुगा उपलब्ध कराने तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण जैसे कार्य भी नियमित रूप से किए जाते हैं।

मनुमुक्त 'मानव' की स्मृति में 'हरियाणवी साहित्य-कला संगम' आयोजित

"म्हारी माट्टी, म्हारे आखर" पुस्तक का हुआ विमोचन

नारनौल. शाबाश इंडिया। मनुमुक्त 'मानव' मेमोरियल ट्रस्ट, नारनौल तथा हरियाणा कला परिषद्, कुरुक्षेत्र के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय हुडा सेक्टर स्थित अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक केंद्र 'मनुमुक्त भवन' में 'हरियाणवी साहित्य-कला संगम' का आयोजन किया गया। उद्योग विस्तार अधिकारी डॉ. सुनील भारद्वाज द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना-गीत के बाद चीफ ट्रस्टी डॉ. रामनिवास 'मानव' के प्रेरक सान्निध्य और डॉ. पंकज गौड़ के कुशल संचालन में समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राजस्थान) के कुलपति एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी डॉ. मनोज कुमार गर्ग ने की। हरियाणा कला परिषद् के उपाध्यक्ष महेश जोशी मुख्य अतिथि तथा सोनीपत के वरिष्ठ साहित्यकार एवं शिक्षाविद् पद्मश्री डॉ. संतराम देशवाल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने दिवंगत डॉ. मनुमुक्त 'मानव' को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी स्मृति में ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यों की सराहना की। ट्रस्टी डॉ. कांता भारती ने बताया कि भारतीय पुलिस सेवा के दिवंगत अधिकारी डॉ. मनुमुक्त 'मानव' की 13वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित इस समारोह में देश के दो दर्जन से अधिक साहित्यकारों ने सहभागिता की। इस अवसर पर भिवानी के साहित्यकार एवं स्तंभकार डॉ. सत्यवान सौरभ और डॉ. प्रियंका सौरभ द्वारा संपादित तथा डॉ. मनुमुक्त 'मानव' को समर्पित पुस्तक 'म्हारी माट्टी, म्हारे आखर' का मंचस्थ अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। आयोजकों के अनुसार, हरियाणवी बोली के इस प्रथम लघुकथा-संकलन में 33 लघुकथाकारों की 3-3 लघुकथाएं यानी कुल 99 लघुकथाएं संकलित हैं। इनमें ऑकलैंड (न्यूजीलैंड) के 1, हरियाणा के 27, राजस्थान के 3 तथा चंडीगढ़ और पंजाब के 1-1 लघुकथाकार शामिल हैं।

भारतीय संस्कृति और जैन दर्शन पर विशेष प्रवचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन नसियां भट्टारकजी में वात्सल्य रत्नाकर पूज्य आचार्य श्री 108 विमल सागर जी मुनिराज के अंतिम दीक्षित शिष्य उपाध्याय श्री 108 ऊर्जयन्त सागर जी मुनिराज 33वें वर्षायोग के लिए प्रवासरत हैं। उनके पावन सान्निध्य में विभिन्न धार्मिक प्रभावना एवं सामाजिक चेतना से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। वर्षायोग समिति के मुख्य संयोजक रुपेन्द्र छाबड़ा एवं मुख्य समन्वयक मनीष बैद ने संयुक्त रूप से बताया कि प्रत्येक रविवार को विशेष प्रवचनमाला का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में रविवार को जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के फिलॉसफी एवं योग संकाय के डीन कौशलेन्द्र दास जी शास्त्री ने "भारतीय संस्कृति और जैन दर्शन" विषय पर सरल भाषा में विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारत में विभिन्न धर्मों के आचरण और धार्मिक क्रियाएं अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन अनेक दार्शनिक अवधारणाओं में समानताएं भी देखने को मिलती हैं। जैन दर्शन के अनुसार सृष्टि का कोई निर्माता नहीं है। यह ब्रह्मांड शाश्वत है और जीव अपने पूर्व कर्मों के अनुसार विभिन्न निमित्तों एवं संयोगों से कार्यों में परिणत होते हैं। वहीं, हिंदू दर्शन में ब्रह्मा, विष्णु और महेश को सृष्टि की रचना, पालन और संहार से जोड़ा गया है तथा ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हुए उनकी प्रार्थना और आशीर्वाद की अवधारणा बताई गई है। पूज्य उपाध्याय ऊर्जयन्त सागर जी ने अपनी देशना में बताया कि जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथ आगम हैं, जिनमें तीर्थंकरों की मूल देशना संकलित है। मोक्ष पूरी तरह आत्मशुद्धि पर निर्भर है। सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र–रत्नत्रय ही मोक्ष का मार्ग है। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कार्यक्रम के सूत्रधार डॉ. एन.के. खींचा, वर्षायोग समिति के अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल, महामंत्री सुखानंद जैन, उपाध्यक्ष पी.के.के. जैन एवं कोषाध्यक्ष दौलत फागीवाला ने किया।

राजस्थान अधिस्वीकृत पत्रकार संघ की संवैधानिक नींव मजबूत

संविधान सभा ने सर्वसम्मति से संविधान किया पारित, डॉ. अखिल बंसल बने अध्यक्ष

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान अधिस्वीकृत पत्रकार संघ की संविधान सभा एवं एडवाइजरी बोर्ड की बैठक डीआईपीआर के पूर्व अतिरिक्त निदेशक गोपाल प्रभाकर की अध्यक्षता, प्रसिद्ध साहित्यकार लोकेश कुमार साहिल के मुख्य आतिथ्य तथा एनयूजेआई के राष्ट्रीय महासचिव राकेश शर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. शांति कुमार पाटिल के मंगलाचरण एवं डॉ. रशिका महर्षि की सरस्वती वंदना से हुआ। संघ के संयोजक डॉ. अखिल बंसल ने काव्यमय स्वागत करते हुए उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि संगठन की संवैधानिक नींव को अंतिम रूप देने के लिए यह महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई है। संगठन का उद्देश्य राजस्थान के अधिस्वीकृत पत्रकारों को एक सशक्त, सम्मानजनक और संगठित मंच प्रदान करना है। मुख्य अतिथि लोकेश कुमार साहिल ने कहा कि "खबर तो वह है जो सरकार छुपाना चाहे, बाकी सब विज्ञापन है।" उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में आई कमियों पर गंभीरता से कार्य करना आज आवश्यक है। अध्यक्षीय उद्बोधन में डीआईपीआर के पूर्व अतिरिक्त निदेशक गोपाल प्रभाकर ने कहा कि सूचना क्रांति के वर्तमान दौर में सकारात्मक पत्रकारिता की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। पत्रकार अपनी कलम के माध्यम से सच्चाई और अच्छाई को उजागर करें, ताकि देश में स्वस्थ एवं सुदृढ़ वातावरण का निर्माण हो सके। वरिष्ठ पत्रकार अशोक शर्मा ने सुझाव दिया कि बिहार सरकार की तर्ज पर राजस्थान में भी पत्रकार के 60 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर स्वतः सम्मान राशि शुरू की जानी चाहिए। डॉ. रशिका महर्षि ने पत्रकारों को चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा सरकार की ओर से सामूहिक जीवन बीमा योजना लागू करने की मांग का सुझाव रखा। बैठक में उपस्थित पत्रकारों ने संघ के संविधान में विभिन्न उपयोगी संशोधन एवं सुझाव प्रस्तुत किए। विस्तृत विचार-विमर्श के बाद एडवाइजरी बोर्ड एवं संविधान सभा ने आवश्यक संशोधनों के साथ राजस्थान अधिस्वीकृत पत्रकार संघ का संविधान सर्वसम्मति से पारित किया। सभा ने संघ के संयोजक डॉ. अखिल बंसल द्वारा अब तक किए गए कार्यों की सराहना की। उनके द्वारा संयोजक पद से दिए गए त्यागपत्र को सभा ने अस्वीकार करते हुए उन्हें संघ का अध्यक्ष मनोनीत करने की घोषणा की। उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से इसका अनुमोदन किया। अध्यक्ष डॉ. अखिल बंसल ने कार्यसमिति के प्रमुख पदाधिकारियों की घोषणा की। सुरेश पारीक को उपाध्यक्ष, डॉ. तरुण जैन को महासचिव, डॉ. रशिका महर्षि को सचिव, दिनेश सिंघल को कोषाध्यक्ष तथा अकलेश जैन को संगठन सचिव बनाया गया। एडवाइजरी बोर्ड में राकेश शर्मा एवं संजय सैनी को शामिल किया गया, जबकि लोकेश कुमार साहिल, गोपाल प्रभाकर एवं फारूक आफरीदी को संरक्षक बनाया गया। संघ के पंजीकरण की प्रक्रिया पूर्ण कराने का दायित्व डॉ. अखिल बंसल, राकेश शर्मा एवं सुरेश पारीक को सौंपा गया।

आर्यिका श्री श्रुतमति माताजी एवं आर्यिका श्री सुबोधमति माताजी के सान्निध्य में जैन जनगणना जागरूकता पोस्टर का विमोचन

सकल दिगंबर जैन समाज की अगुवाई में हुआ आयोजन, जनगणना में धर्म के कॉलम में ''जैन'' दर्ज कराने की अपील

फागी. शाबाश इंडिया

कस्बे के पार्श्वनाथ चैत्यालय में विराजमान आर्यिका 105 श्री श्रुतमति माताजी एवं आर्यिका श्री सुबोधमति माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में सकल दिगंबर जैन समाज की अगुवाई में सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन समाज की जनगणना को लेकर जागरूकता पोस्टर का भव्य विमोचन किया गया। कार्यक्रम में जयपुर जिला अल्पसंख्यक कोऑर्डिनेटर राजाबाबू गोधा ने बताया कि भारत सरकार की जनगणना 2027 की प्रक्रिया शुरू हो गई है। उन्होंने कहा कि जैन समाज के संगठनों एवं आचार्यों की ओर से जैन धर्मावलंबियों से अपील की जा रही है कि जनगणना फॉर्म भरते समय अपने धर्म और पहचान की सही जानकारी दर्ज कराएं। गोधा ने बताया कि दिल्ली से जैन समाज की जनगणना 2027 के लिए ऐश्वर्य जैन, मनीष जैन एवं बादल जैन की अगुवाई में टीम पहुंची। टीम ने आर्यिका संघ के पावन सान्निध्य में सकल दिगंबर जैन समाज की अगुवाई में जैन जनगणना जागरूकता पोस्टर का विमोचन कराया और जनगणना में सही जानकारी दर्ज कराने को लेकर जागरूक किया। उन्होंने बताया कि 2011 की सरकारी जनगणना के अनुसार भारत में जैन समुदाय की आबादी लगभग 44.5 लाख (4.45 मिलियन) थी, जबकि जैन संस्थाओं का मानना है कि वास्तविक संख्या इससे अधिक हो सकती है। सही जनगणना होने से समुदाय की वास्तविक संख्या सामने आएगी और अल्पसंख्यक समुदायों के लिए उपलब्ध अधिकारों एवं योजनाओं का लाभ प्रभावी रूप से प्राप्त किया जा सकेगा। गोधा ने बताया कि 27 जनवरी 2014 को भारत सरकार ने जैन समुदाय को धर्म के आधार पर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदाय का दर्जा दिया था। उन्होंने कहा कि जैन समाज की सही और संपूर्ण जनगणना समुदाय की पहचान, सरकारी योजनाओं के लाभ तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि जनगणना के पहले चरण में मकान सूचीकरण किया गया था, जिसमें धर्म का कॉलम नहीं था। जनगणना के दूसरे चरण में फरवरी 2027 में स्व-गणना का अवसर रहेगा, जिसमें लोग स्वयं अपना विवरण दर्ज कर सकेंगे। उन्होंने जैन समाज से इस प्रक्रिया को लेकर अभी से जागरूक रहने का आान किया। आर्यिका श्री श्रुतमति माताजी ने कहा कि इस बार जनगणना में सभी को सजग रहना है। उन्होंने कहा कि जैन धर्म है, जाति नहीं। फॉर्म भरते समय स्वयं यह सुनिश्चित करें कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के सामने धर्म के कॉलम में ''जैन'' ही दर्ज हो। उन्होंने समाजजनों से जाति, संप्रदाय अथवा अन्य पहचान के बजाय धर्म के कॉलम में सही जानकारी दर्ज कराने की अपील की। आर्यिका श्री ने कहा कि जैन धर्म किसी अन्य धर्म की शाखा नहीं, बल्कि अनादि-अनंत एवं स्वतंत्र परंपरा है। इसके अपने 24 तीर्थंकर हैं। अहिंसा, अनेकांतवाद, अपरिग्रह और स्याद्वाद इसकी प्रमुख जीवन-दृष्टियां हैं। उन्होंने कहा कि जैन समाज की धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखने के लिए जनगणना में सही जानकारी दर्ज कराना आवश्यक है। कार्यक्रम में अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा एवं मंदिर समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष महेंद्र बावड़ी ने कहा कि अल्पसंख्यक दर्जा केवल सरकारी सुविधाओं का विषय नहीं, बल्कि समुदाय के अस्तित्व, संस्कृति और विरासत की रक्षा से जुड़ा विषय है। इस अवसर पर अग्रवाल समाज अध्यक्ष महावीर झंडा, कार्यवाहक अध्यक्ष महेंद्र बावड़ी, सरावगी समाज अध्यक्ष महावीर अजमेरा, कैलाश कासलीवाल, पंडित संतोष बजाज, सुरेंद्र पंसारी, अशोक बजाज, त्रिलोक जैन, ललित जैन मांदी, कमलेश चौधरी, राजाबाबू गोधा एवं मुन्नी कागला सहित महिला मंडल की रानी नला, ममता कलवाड़ा, रेखा बावड़ी, रेखा झंडा, मंजू बावड़ी, रुचि गोधा एवं सोनाली झंडा सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

राजाबाबू गोधा
अल्पसंख्यक कोऑर्डिनेटर, जिला जयपुर

जीभ से नहीं, आचरण से बोलता है दिगंबर संत का जीवन : अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागरजी

पुष्पगिरी तीर्थ में धर्मसभा के दौरान गूंजे प्रेरक विचार; बोले—भौतिकता के दौर में दिगंबर संत बनना बिना दांत के चना चबाने जैसा कठिन

सोनकच्छ. शाबाश इंडिया

जीभ से बोले गए शब्दों का सफर केवल कानों तक होता है, लेकिन आचरण और जीवन के मौन शब्दों की यात्रा व्यक्ति के जीवन को ही तीर्थ बना देती है। यह प्रेरक उद्बोधन व्रत चक्रवर्ती पट्टविभूषण अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने पुष्पगिरी तीर्थ में आयोजित धर्मसभा में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए दिया। पुष्पगिरी तीर्थ के प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागरजी महाराज एवं उपाध्याय श्री पीयूष सागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज का वषायोग पुष्पगिरी तीर्थ, सोनकच्छ में आध्यात्मिक वातावरण में चल रहा है। इस दौरान तीर्थ परिसर में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान, पूजन-विधान एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल होकर धर्मलाभ ले रहे हैं। धर्मसभा में आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने दिगंबरत्व की महिमा समझाते हुए कहा कि दिगंबर जैन संत अपने उपदेशों से कम और अपने जीवन, तप, त्याग एवं विशुद्ध आचरण से अधिक बोलते हैं। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण समाज के लिए संदेश और प्रेरणा बन जाता है। उन्होंने कहा कि आज भौतिकता, आकर्षण और चकाचौंध से भरी दुनिया में दिगंबर संत बनना अत्यंत कठिन साधना है। यह बिना दांत के चना चबाने अथवा तकिए से कील ठोकने जैसा कठिन कार्य है। दिगंबरत्व केवल बाहरी स्वरूप नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्ध एवं सहज अवस्था की साधना है। आचार्य श्री ने कहा कि दुनिया में सामान्यतः संन्यास का अर्थ एक वेश छोड़कर दूसरा वेश धारण करना माना जाता है, लेकिन भगवान महावीर के मार्ग पर चलने वाले दिगंबर मुनि के लिए संन्यास का अर्थ है—केवल छोड़ना ही छोड़ना है, ओढ़ना कुछ भी नहीं। आचार्य श्री ने कहा कि त्याग करते-करते जब आत्मा की सहज एवं प्राकृतिक स्थिति प्रकट होती है, वही वास्तविक दिगंबरत्व है। बाहरी वस्त्रों का त्याग अपेक्षाकृत सरल हो सकता है, लेकिन मन के भीतर बैठे विकारों, वासनाओं, इच्छाओं और आसक्तियों का त्याग करना सबसे कठिन साधना है। उन्होंने कहा, प्रकृति ने हमें जिस प्राकृतिक रूप में भेजा है, उसी में निर्विकारी भाव से जीवन जीना मुनिधर्म की साधना है। वस्त्रों का त्याग केवल बाहरी परिवर्तन है, जबकि भीतर के विकारों पर विजय प्राप्त करना वास्तविक साधना है। जो अपने भीतर के विकारों और वासनाओं को जीत लेता है, वही सच्चे अर्थों में महावीर के मार्ग पर आगे बढ़ता है। धर्मसभा में आचार्य श्री के विचारों ने श्रद्धालुओं को आत्मचिंतन, संयम और त्याग की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के दौरान तीर्थ परिसर में भक्तिमय वातावरण बना रहा।

प्रचार-प्रसार संयोजकः
नरेंद्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल, औरंगाबाद

राष्ट्रीय कवि चौपाल की 75वीं काव्य संगोष्ठी का भव्य आयोजन

51 साहित्यकारों को मिला "चौपाल साहित्य अमृत सम्मान", हास्य, वीर और श्रृंगार रस की कविताओं से कवियों ने लूटी वाहवाही

दौसा. शाबाश इंडिया

राष्ट्रीय कवि चौपाल, दौसा की 75वीं काव्य संगोष्ठी का भव्य आयोजन होटल रावत पैलेस में किया गया। कार्यक्रम में जिले सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए साहित्यकारों एवं कवियों ने अपनी रचनाओं की शानदार प्रस्तुतियां देकर साहित्यिक वातावरण को जीवंत बना दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सहायक निदेशक, शिक्षा विभाग रामस्वरूप महावर रहे। एयरपोर्ट अधीक्षक छुट्टन लाल मीना, व्यंग्यकार गोपाल टेलर, वरिष्ठ साहित्यकार पुष्पेंद्र शर्मा, लेखाधिकारी नीरज शर्मा, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी सुशील शर्मा एवं राष्ट्रीय कवयित्री सपना सोनी विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. बाबूलाल बोहरा ने की। अतिथियों ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कवि बुद्धि प्रकाश महावर मन ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। राष्ट्रीय कवि चौपाल के जिलाध्यक्ष कवि कृष्ण कुमार सैनी ने संस्था का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए चौपाल की साहित्यिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। उपाध्यक्ष बृजमोहन मीना ने चौपाल स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर 51 साहित्यकारों को चौपाल साहित्य अमृत सम्मान से सम्मानित किया गया। सभी सम्मानित साहित्यकारों को सम्मान-पत्र एवं स्मृति-चिह्न भेंट किए गए। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. बाबूलाल बोहरा ने कहा कि राष्ट्रीय कवि चौपाल नवोदित प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने का सराहनीय कार्य कर रही है। वरिष्ठ साहित्यकार पुष्पेंद्र शर्मा ने कहा कि कवियों को श्रेष्ठ साहित्य पढ़ने के साथ अच्छे कवियों को सुनना चाहिए। इससे कविता की समझ और लेखन क्षमता विकसित होती है। राष्ट्रीय कवयित्री सपना सोनी ने गीत एवं गजल की प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में कवियों ने हास्य, वीर एवं श्रृंगार रस की रचनाएं प्रस्तुत कर जमकर वाहवाही लूटी। प्रभावशाली प्रस्तुतियों पर श्रोताओं ने तालियों से कवियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के दौरान स्वीप कोऑर्डिनेटर डॉ. रामवीर चौधरी ने उपस्थित साहित्यकारों एवं अतिथियों को मतदान की शपथ दिलाई और मतदान के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। कार्यक्रम का प्रभावी मंच संचालन मिमिक्री कलाकार अशोक खेड़ला ने किया। अंत में राष्ट्रीय कवि चौपाल के सचिव कवि दिनेश तूफानी ने सभी अतिथियों, साहित्यकारों एवं उपस्थित श्रोताओं का आभार व्यक्त किया। 75वीं काव्य संगोष्ठी के सफल आयोजन पर साहित्यकारों ने राष्ट्रीय कवि चौपाल के पदाधिकारियों को बधाई देते हुए संस्था की साहित्यिक गतिविधियों की सराहना की।

नीलांबरी फाउंडेशन के बैनर तले "अक्स-ए-गजल" पर पुस्तक चर्चा आयोजित

मुंबई के साहित्यकारों और विद्वानों ने शायर शिवदत्त 'अक्स' की पुस्तक पर रखे विचार

मुंबई. शाबाश इंडिया। नीलांबरी फाउंडेशन के बैनर तले जाने-माने शायर शिवदत्त 'अक्स' की पुस्तक 'अक्स-ए-गजल' पर पुस्तक चर्चा का आयोजन शनिवार को शाम 5 बजे से रात 9 बजे तक ट्वेंटी डाउनटाउन हॉल, चर्चगेट स्टेशन के सामने, इरास सिनेमा बिल्डिंग में किया गया। कार्यक्रम में मुंबई शहर के अनेक साहित्यकारों, विद्वानों एवं साहित्यप्रेमियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम की शुरूआत पत्रकार तथा नीलांबरी फाउंडेशन के सचिव एवं मीडिया प्रभारी लक्ष्मीकांत कमलनयन मिश्र ने की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय शायर डॉ. सागर त्रिपाठी ने की। उनके अध्यक्षीय वक्तव्य को उपस्थित साहित्यकारों ने सराहा। कार्यक्रम में मुंबई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने अपने बौद्धिक एवं प्रभावी वक्तव्य से पुस्तक के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। इसके बाद एस.एन.डी.टी. महाविद्यालय की प्राध्यापिका उषा अशोक ने अपने विशिष्ट अंदाज में पुस्तक पर विचार व्यक्त किए। फिल्म लेखक एवं निर्देशक तथा शायर गुलशन मदान ने पुस्तक से चुनिंदा शेर पढ़ते हुए प्रभावशाली ढंग से अपनी बात रखी। उनके वक्तव्य ने श्रोताओं पर गहरी छाप छोड़ी। वहीं डॉ. कृपाशंकर मिश्रा ने अपने मुक्तकों की प्रस्तुति से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद पुस्तक के लेखक शिवदत्त 'अक्स' ने अपनी रचना-प्रक्रिया एवं पुस्तक से जुड़े अनुभव साझा किए। संस्था की संस्थापक अध्यक्ष डॉ. नीलिमा पाण्डेय ने पुस्तक से चुनिंदा गजलों का पाठ किया, जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा।

हावड़ा विवेक विहार में प्रतिदिन चल रहा भव्य 1008 श्री शांतिनाथ विधान

हावड़ा. शाबाश इंडिया

हावड़ा के विवेक विहार (बंगवासी) में विराजमान परम पूज्य आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी महामुनिराज ससंघ के पावन चातुर्मास के दौरान प्रतिदिन भव्य "जगत शांति प्रदायक 1008 श्री शांतिनाथ विधान" का आयोजन श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ किया जा रहा है। प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान जिनेंद्र देव के मंगल अभिषेक, शांतिधारा, पूजन एवं विधान के साथ धार्मिक कार्यक्रमों की शुरूआत होती है। भाद्रपद माह के प्रथम रविवार को भक्तों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। श्रद्धालुओं ने भक्तिभावपूर्वक अभिषेक एवं शांतिधारा के बाद देव-शास्त्र-गुरु पूजन, सोलहकारण पूजा एवं भव्य 1008 श्री शांतिनाथ विधान संपन्न किया। इस अवसर पर हावड़ा एवं बृहत्तर कोलकाता से बड़ी संख्या में आए साधर्मी बंधुओं ने आचार्य श्री ससंघ के दर्शन कर उनके पावन प्रवचनों का लाभ लिया। आचार्य श्री ने अपने संबोधन में श्रद्धालुओं को धर्म के मार्ग पर चलने तथा जीवन में शांति, संयम एवं सद्भाव अपनाने की प्रेरणा दी। प्रातःकालीन धार्मिक कार्यक्रमों में उत्तर हावड़ा (डबसन रोड) से आए "पूजा प्रक्षाल ग्रुप" के सदस्यों ने भी सहभागिता करते हुए पूजा-अर्चना एवं विधान में भाग लिया। इस अवसर पर सुजीत जैन (सोनू भैया) ने स्थानीय जैन समाज एवं सभी पदाधिकारियों द्वारा की गई सुंदर, भव्य एवं सुव्यवस्थित व्यवस्थाओं के लिए हृदय से आभार व्यक्त किया। प्रातःकालीन सत्र के समापन पर आयोजकों एवं स्थानीय जैन समाज की ओर से सभी अतिथियों, श्रद्धालुओं एवं धमार्नुरागी साधर्मी बंधुओं का आभार व्यक्त किया गया।

शरीर स्वस्थ रहेगा तभी व्रत का पालन अतिचार रहित कर सकेंगे : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

सोलहकारण भावनाओं का उद्देश्य वर्ष में तीन बार नहीं, बल्कि पूरे वर्ष आत्मकल्याण की भावना करना : आचार्य श्री

जयपुर. शाबाश इंडिया

शरीर को खान-पान, आचार-विचार, संस्कृति एवं संस्कारों के माध्यम से स्वस्थ रखना चाहिए, क्योंकि शरीर स्वस्थ रहेगा तभी व्रत का पालन अतिचार रहित किया जा सकता है। केवल मनुष्य गति में ही आत्मा संयम एवं वैराग्य धारण कर परमात्म पद प्राप्त कर सकती है। परमात्म पद प्राप्त करने के बाद आत्मा का जन्म-मरण का परिभ्रमण समाप्त हो जाता है। यह मंगल देशना राजकीय अतिथि आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज ने दंग की नसियां स्थित पारस भवन के आचार्य धर्मसागर सभागृह में धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त की। डॉ. राजेश पंचोलिया के अनुसार, आचार्य श्री ने कहा कि सोलहकारण भावना का पर्व वर्ष में तीन बार आता है, लेकिन इसका आशय केवल इन अवसरों तक सीमित नहीं है। पूरे वर्ष के 365 दिन, हर समय सोलहकारण भावनाओं का चिंतन-मनन करना चाहिए। यही आत्मा के लिए हितकारी है। मिथ्यात्व, मोह, राग और द्वेष आत्मा की उन्नति में बाधक हैं। भावना भव-नाशिनी होती है और भावनाओं के माध्यम से ही कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। हमारा लक्ष्य सदैव आत्मा की उन्नति होना चाहिए। उन्होंने कहा कि व्रत धारण करने से आत्मिक उन्नति होती है। व्रत को भावना एवं जागरूकता के साथ, दोषरहित ढंग से करना चाहिए। सभी को आत्मा के वास्तविक स्वरूप को नहीं भूलना चाहिए। जीवन में उपवास का भी विशेष महत्व है। उपवास के माध्यम से जीव आत्मा के अधिक निकट रहता है। आज की भावना ''शीलव्रतेष्वनतीचार भावना'' की विवेचना करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि शील, व्रत और अनतीचार के भाव को समझना आवश्यक है। शील एवं व्रत में अतिचार का दोष नहीं आना चाहिए। उन्होंने शील-व्रत तथा दिग्व्रत, देशव्रत और अनर्थदंड व्रत की विस्तार से विवेचना की। चारों दिशाओं की सीमा का निर्धारण करना दिग्व्रत है। मन, वचन और काय की समीचीन प्रवृत्ति के साथ व्रत एवं उपवास का पालन करते हुए अतिचार से बचना चाहिए। धार्मिक कार्यों में अतिचार का भाव भी अनर्थदंड का कारण बन सकता है। धर्मोपदेश के माध्यम से आत्मा में जमा कचरे के समान विकारों को नष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य श्री ने कहा कि शरीर को उचित खान-पान, आचार-विचार, संस्कृति एवं संस्कारों के माध्यम से स्वस्थ रखना चाहिए, क्योंकि स्वस्थ शरीर के माध्यम से ही व्रत और संयम का समुचित पालन किया जा सकता है।

भाद्रपद माह जैन धर्म में विशेष धार्मिक महत्व वाला : आर्यिका पदमयशमति माताजी

आचार्य श्री के प्रवचन से पूर्व युवा आर्यिका श्री पदमयशमति माताजी ने धर्मसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भाद्रपद माह वर्ष के सबसे पवित्र महीनों में से एक है, क्योंकि जैन धर्म के अनेक महत्वपूर्ण पर्व एवं धार्मिक आयोजन इसी माह में आते हैं। उन्होंने कहा कि धार्मिक कार्यों के प्रभाव से पुण्य का अर्जन किया जा सकता है। सोलहकारण भावनाओं के माध्यम से तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति का बंध होता है। तीर्थंकरों की दिव्य ध्वनि जिनधर्म का स्वरूप है। तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति का बंध अत्यंत उत्कृष्ट पुण्य का परिणाम है और इसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य पर्याय को महत्वपूर्ण माना गया है। आर्यिका श्री ने दर्शन विशुद्धि भावना एवं विनय संपन्नता भावना की भी संक्षिप्त विवेचना की और श्रद्धालुओं को आत्मकल्याण के लिए इन भावनाओं को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में पुण्यशाली परिवारों ने दीप प्रज्वलित कर आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन किए तथा जिनवाणी भेंट की। धर्मसभा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे और आचार्य श्री के प्रवचन का लाभ लेकर धर्मलाभ प्राप्त किया।

प्रभु के वीतराग स्वरूप की महिमा अद्वितीय, ज्ञान ही आत्मा का भोजन : विहर्ष सागर

धर्मसभा में पूर्वाचार्यों के प्रति श्रद्धा एवं विनय भाव प्रकट किया

किशनगढ़. शाबाश इंडिया

आर.के. कम्युनिटी सेंटर में आचार्य श्री 108 विहर्ष सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में आयोजित धर्मसभा में पूर्वाचार्यों के प्रति श्रद्धा एवं विनय भाव प्रकट किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज, आचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज एवं आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज के चित्रों का अनावरण किया गया। चित्र अनावरण का सौभाग्य किशनगढ़ के भक्तों को प्राप्त हुआ। श्रद्धालुओं ने पूर्वाचार्यों के चरणों में श्रद्धापूर्वक अर्घ्य भी समर्पित किए। मंच संचालन बसंत बैद ने किया। उपाध्याय श्री 108 विजयेश सागर जी महाराज ने प्रवचन में ज्ञानावरण ग्रंथ के संदर्भ में कहा कि मुनि का मन स्थिर होता है। तपस्वी साधु ज्ञान और ध्यान में लीन रहते हुए कषायों से दूर रहते हैं। मुनि का चित्त प्रसन्न रहना चाहिए और प्रसन्नता अंतगुर्णों का प्रतीक है। साधु राग-द्वेष से दूर रहता है तथा उसके जीवन में ज्ञान की प्रधानता होती है। उन्होंने कहा कि ज्ञान ही आत्मा का भोजन है। साधु-संतों के दर्शन एवं संगति से जीवन में ज्ञान, ध्यान और तप की प्रेरणा मिलती है। पहले गुरुकुलों में बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार भी दिए जाते थे। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जिसे धन सहज रूप से विरासत में मिल जाता है, उसे उसकी वास्तविक कीमत का अनुभव नहीं होता। उसी प्रकार जीवन का अनुभव भी समय और संघर्ष से प्राप्त होता है। बुजुर्गों के पास जीवन का व्यापक अनुभव होता है, इसलिए उनके अनुभवों से सीखना चाहिए। उन्होंने कहा कि जीवन में साधु-संतों की संगति करने तथा धर्म, ज्ञान और आत्मचिंतन की चर्चा करने से सकारात्मक परिवर्तन आता है। श्रद्धा के साथ जब सही जानकारी प्राप्त होती है, तब साधना का मार्ग प्रशस्त होता है। जहां सच्ची श्रद्धा होती है, वहां आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग खुलता है।

भक्तामर के 12वें काव्य में भगवान के वीतराग स्वरूप की महिमा

आचार्य श्री 108 विहर्ष सागर जी महाराज ने भक्तामर स्तोत्र के 12वें काव्य का भावार्थ समझाते हुए भगवान के दिव्य, अनुपम एवं वीतराग स्वरूप की महिमा बताई। उन्होंने कहा कि प्रभु का शरीर जिन परमाणुओं से निर्मित हुआ है, वे शांति, निर्मलता और वीतराग भाव के प्रतीक हैं। इसी कारण तीनों लोकों में भगवान का स्वरूप अद्वितीय एवं अनुपम माना गया है। उन्होंने कहा कि पृथ्वी पर असंख्य परमाणु विद्यमान हैं, लेकिन उन्हीं परमाणुओं से भगवान के समान दूसरा स्वरूप निर्मित नहीं किया जा सकता। प्रभु की महानता केवल बाहरी सौंदर्य में नहीं, बल्कि राग-द्वेष से पूर्ण मुक्ति, आत्मिक शांति और निर्मलता में निहित है।

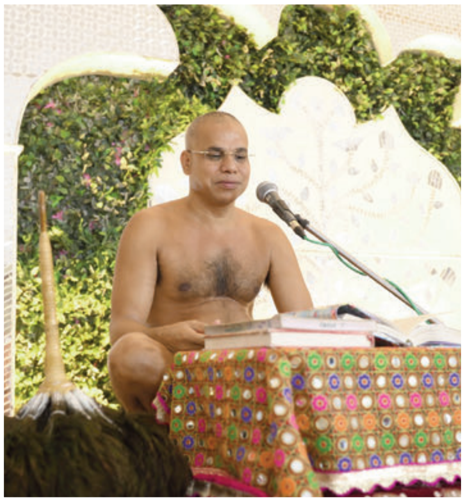

भाद्रपद दशलक्षण महापर्व 15 से 25 सितंबर तक

सभी जिनालयों में प्रतिदिन होगी दशलक्षण धर्म की विशेष पूजा

मुरैना (मनोज जैन नायक)। दिगंबर जैन समाज का आत्मशुद्धि, संयम और आत्मचिंतन का प्रमुख पर्व दशलक्षण महापर्व इस वर्ष 15 से 25 सितंबर तक मनाया जाएगा। पर्व के दौरान नगर के विभिन्न जिनालयों में प्रतिदिन दशलक्षण धर्म की विशेष पूजा, अभिषेक, स्वाध्याय, सामायिक, तप, ध्यान एवं धार्मिक प्रवचनों का आयोजन किया जाएगा। वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य डॉ. हुकुमचंद जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि जैन दर्शन में दशलक्षण धर्म किसी व्यक्ति विशेष के गुण नहीं, बल्कि शुद्ध आत्मा के स्वाभाविक गुण माने गए हैं। इसलिए दशलक्षण महापर्व केवल बाहरी धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि आत्माराधना, आत्मचिंतन और कषायों को कम करने का अवसर है। उन्होंने बताया कि सामान्यतः दशलक्षण पर्व भाद्रपद शुक्ल पंचमी से भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तक मनाया जाता है। इस वर्ष पंचमी की तिथि को लेकर अलग-अलग पंचांगों एवं परंपराओं में मतभेद के कारण पर्व की तिथियों को लेकर भिन्नता है। कुछ स्थानों पर आचार्यों के मतानुसार 16 सितंबर से पवार्रंभ माना जा रहा है, जबकि यहां 15 सितंबर से दशलक्षण पर्व की आराधना प्रारंभ की जाएगी।

दस धर्म देते हैं आत्मशुद्धि का संदेश

उत्तम क्षमा – क्रोध और द्वेष का त्याग कर सभी जीवों के प्रति क्षमाभाव रखना।
उत्तम मार्दव – धन, पद, ज्ञान, रूप और प्रतिष्ठा आदि के अहंकार का त्याग कर विनम्रता अपनाना।
उत्तम आर्जव – मन, वचन और कर्म में सरलता रखना तथा कपट और छल से दूर रहना।
उत्तम शौच – लोभ और तृष्णा से मन को मुक्त करना। केवल बाहरी स्वच्छता ही नहीं, बल्कि भावों की निर्मलता को महत्व देना।
उत्तम सत्य – सत्य बोलना तथा हित, मित और प्रिय वचनों का प्रयोग करना।
उत्तम संयम – मन, वचन और शरीर पर नियंत्रण रखते हुए इंद्रियों को विषयों में अनियंत्रित रूप से प्रवृत्त न होने देना तथा जीवों की रक्षा करना।
उत्तम तप – उपवास, एकासन आदि बाह्य तप के साथ आंतरिक विकारों को दूर करने का प्रयास करना।
उत्तम त्याग – दान, सेवा और परोपकार के साथ राग-द्वेष एवं कषायों का त्याग करना।
उत्तम आकिंचन्य – ''यह मेरा है'' की भावना को कम करते हुए वस्तुओं के प्रति आसक्ति का त्याग करना।
उत्तम ब्रह्मचर्य – इंद्रिय संयम के साथ पर-पदार्थों से विमुख होकर निज आत्मा में रमण और आत्मचिंतन करना।

जिनालयों में होंगे धार्मिक आयोजन

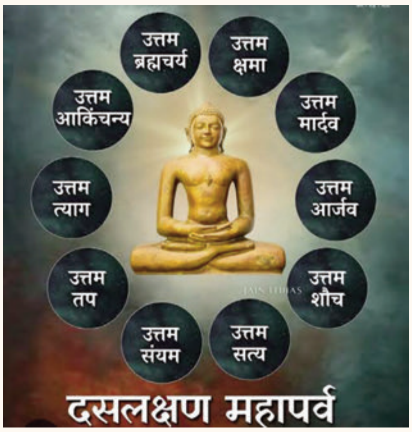

दशलक्षण महापर्व के दौरान जैन धर्मावलंबी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार जिनेंद्र भगवान का अभिषेक एवं पूजन, दशलक्षण धर्म की दैनिक पूजा, स्वाध्याय, शास्त्र वाचन, सामायिक, प्रतिक्रमण, ध्यान, एकासन, उपवास, जीवदया एवं दान जैसे धार्मिक कार्य करेंगे। रात्रि में धार्मिक प्रवचन एवं अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। डॉ. जैन ने कहा कि दशलक्षण पर्व में तप और व्रत की कठोरता प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार रखता है। इसका उद्देश्य केवल शरीर को कष्ट देना नहीं, बल्कि आत्मा के परिणामों को निर्मल करना है। दस दिनों के दौरान क्रोध, मान, माया और लोभ जैसी कषायों को कम करने तथा क्षमाभाव एवं आत्मचिंतन को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। उन्होंने कहा कि दशलक्षण महापर्व को केवल दस दिनों का धार्मिक पर्व मानना पर्याप्त नहीं है। यह जीवन को बेहतर बनाने वाली दस आध्यात्मिक शिक्षाओं का पर्व है, जो व्यक्ति को आत्मचिंतन, संयम और शुद्ध आत्मस्वरूप की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

डडूका में श्रमण संस्कृति रक्षा दिवस पर रात्रि में हुई भक्तामर दीप महार्चना

अजीत कोठिया, डडूका (बांसवाड़ा). शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन समाज, जैन युवा समिति, प्रभावना महिला मंडल एवं पाठशाला परिवार के संयुक्त तत्वावधान में दिगंबर जैन मंदिर, डडूका में श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के अवसर पर जैन धर्म के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ के मोक्ष कल्याणक पर रात्रि में भक्तामर दीप अर्चना का आयोजन कर श्रमण संस्कृति रक्षा दिवस मनाया गया। समाज प्रवक्ता राकेश शाह ने बताया कि आयोजन के पुण्यार्जक सुधीर विजयचंद सेठ परिवार रहे। समाजजनों ने श्रीजी के समक्ष मंत्रोच्चार के साथ 48 दीप प्रज्वलित कर दीप आराधना की। इसके बाद भक्तिमय आरती एवं स्तुति का आयोजन हुआ। आचार्य मानतुंग रचित ''भक्तामर स्तोत्र'' का काव्य पाठ मनोज शाह ने किया। इस दौरान श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से स्तोत्र का श्रवण किया और धार्मिक आयोजन में सहभागिता की। कार्यक्रम में समाज अध्यक्ष राजेश शाह, कल्प सेठ, अशोक शाह, धनपाल शाह, अजीत कोठिया, रितेश शाह, तेजपाल सेठ एवं वस्तुपाल शाह सहित बड़ी संख्या में महिलाएं एवं समाजजन उपस्थित रहे।

णमोकार महामंत्र के जयघोष से आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर हुई जैन बगीची

नायक परिवार कमतरी वालों ने कराया संगीतमय महाआरती का आयोजन

मुरैना/अम्बाह (मनोज जैन नायक). शाबाश इंडिया। नगर की जैन बगीची में रविवार शाम भक्ति, आराधना और आध्यात्मिक साधना का अनुपम वातावरण देखने को मिला। परम पूज्य गुरु मां गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री संगममति माताजी ससंघ के मंगल सान्निध्य में चल रही 35 दिवसीय णमोकार महामंत्र अर्चना के अंतर्गत नायक परिवार कमतरी वालों की ओर से संगीतमय महाआरती का आयोजन किया गया। धार्मिक आयोजन का शुभारंभ तहसील के समीप स्थित निज निवास से हुआ। शाम करीब 6 बजे श्रद्धालु भक्ति गीतों एवं णमोकार महामंत्र के जयघोष के साथ जैन बगीची के लिए रवाना हुए। भक्ति भाव से ओतप्रोत श्रद्धालुओं के पहुंचने से जैन बगीची परिसर भक्तिमय हो गया। विधि-विधान एवं भक्तिभाव के साथ श्रीजी की महाआरती संपन्न हुई, जिसमें बड़ी संख्या में समाजजनों ने सहभागिता की। महाआरती के बाद श्रद्धालुओं ने करीब एक घंटे तक सामूहिक रूप से णमोकार महामंत्र का जाप किया। एक साथ गूंजते मंत्रोच्चार से पूरा जैन बगीची परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा से भर उठा। श्रद्धालुओं ने महामंत्र की आराधना करते हुए परिवार एवं समाज में सुख, शांति और मंगल की कामना की। महाआरती का पुण्यार्जन स्वर्गीय राधाचरण जैन कमतरी वालों के परिजनों ने प्राप्त किया। पुण्यार्जक परिवार में कपूर चंद जैन, हेमलता जैन, हजारी लाल जैन, इंजीनियर अंकित जैन, वर्षा जैन, राहुल जैन, सौरभ जैन, सोनम जैन, मनीष जैन एवं कल्पना जैन सहित समस्त नायक परिवार कमतरी वाले, डॉक्टर कॉलोनी, अम्बाह (अहिंसा परिवार, दिल्ली) शामिल रहे। इस अवसर पर इंजीनियर अंकित जैन ने कहा कि णमोकार महामंत्र आत्मिक शांति एवं आध्यात्मिक साधना का महत्वपूर्ण माध्यम है। गुरु मां संगममति माताजी ससंघ के सान्निध्य में चल रही 35 दिवसीय आराधना के दौरान महाआरती का पुण्यार्जन प्राप्त करना परिवार के लिए गौरव और सौभाग्य का विषय है। ऐसे धार्मिक आयोजनों से समाज में संस्कार, सद्भाव और धर्म के प्रति जागरूकता को बल मिलता है। चातुर्मास समिति अम्बाह एवं सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में समाजजनों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की और णमोकार महामंत्र की आराधना का लाभ लिया।

वार्ड नंबर 31 से कांग्रेस प्रत्याशी राजेश कुमार जैन ने दाखिल किया नामांकन

टोंक. शाबाश इंडिया

नगर परिषद टोंक के वार्ड नंबर 31 से पार्षद पद के लिए कांग्रेस प्रत्याशी राजेश कुमार जैन उर्फ ''राजेश अरिहंत'' ने सोमवार को अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। नामांकन के दौरान समर्थकों एवं कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह देखने को मिला। राजेश अरिहंत ने कहा कि वार्ड की जनता ने उन्हें जो विश्वास और समर्थन दिया है, वह उनके लिए बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि वार्ड नंबर 31 का विकास और मूलभूत सुविधाओं को बेहतर बनाना उनकी प्राथमिकता रहेगी। वे वार्डवासियों के बीच रहकर उनकी समस्याओं को सुनने और उनके समाधान के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। उन्होंने वार्डवासियों से अपील की कि आगामी चुनाव में उनके पक्ष में मतदान कर उन्हें अपना आशीर्वाद एवं समर्थन प्रदान करें। ज्ञातव्य है कि राजेश अरिहंत जैन समाज टोंक के प्रवक्ता, महाराणा प्रताप छोटा बाजार, पुरानी टोंक के अध्यक्ष तथा पुस्तक विक्रेता संघ टोंक के कोषाध्यक्ष एवं सलाहकार जैसे विभिन्न सामाजिक दायित्वों का निर्वहन कर चुके हैं। वे सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाने के साथ प्रशासनिक एवं राजनीतिक मंचों पर भी आमजन की आवाज उठाते रहे हैं। विभिन्न समाचार पत्रों के माध्यम से वे आमजन की समस्याओं एवं मांगों को प्रमुखता से उठाते रहे हैं और उनके समाधान के लिए लगातार प्रयासरत रहे हैं।

मिशन मुस्कान के तहत आंगनवाड़ी के 20 बच्चों को गणवेश एवं स्कूल बैग भेंट

अजमेर. शाबाश इंडिया

लायंस क्लब अजमेर आस्था की ओर से लायंस क्लब्स इंटरनेशनल के प्रांतीय प्रमुख कार्यक्रम ''मिशन मुस्कान'' के अंतर्गत सेवा प्रकल्पों का निरंतर आयोजन किया जा रहा है। जरूरतमंद विद्यार्थियों एवं आंगनवाड़ी के नन्हे-मुन्ने बच्चों को शैक्षणिक सामग्री एवं आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध करवाकर उनके चेहरों पर मुस्कान लाने का प्रयास किया जा रहा है। इसी सेवा क्रम में समाजसेवी लायन राकेश पालीवाल, पूर्व क्षेत्रीय अध्यक्ष लायन मधु पाटनी एवं अन्य भामाशाहों के सहयोग से पहाड़गंज क्षेत्र के स्लम एरिया में संचालित शिव कॉलोनी आंगनवाड़ी के 20 बच्चों को गणवेश (बाबा सूट) एवं स्कूल बैग भेंट किए गए। क्लब सचिव लायन अनिल चोरड़िया ने बताया कि कार्यक्रम का संयोजन प्रांतीय सभापति, मिशन मुस्कान लायन अतुल पाटनी ने किया। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सुमन रेवासिया एवं सहायिका ज्योति को बच्चों के लिए गणवेश एवं स्कूल बैग प्रदान किए गए, जिनका वितरण बच्चों के अभिभावकों की उपस्थिति में किया गया। सेवा सामग्री प्राप्त कर नन्हे-मुन्ने बच्चों एवं उनके अभिभावकों में खुशी की लहर दौड़ गई। कार्यक्रम के अंत में क्लब अध्यक्ष लायन कमल बाफना ने सेवा सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि लायंस क्लब अजमेर आस्था की ओर से समाज के पिछड़े एवं जरूरतमंद क्षेत्रों में संचालित विद्यालयों और आंगनवाड़ी केंद्रों में शिक्षा एवं सेवा से जुड़े कार्य निरंतर जारी रखे जाएंगे।

नेपाल त्रासदी पीड़ित परिवारों के लिए राहत सामग्री रवाना

नेपाल के स्पीकर ने मानवीय पहल की सराहना की

काठमांडू, नेपाल. शाबाश इंडिया

अंतर्राष्ट्रीय समरसता मंच एवं इंडो-नेपाल समरसता ऑर्गनाइजेशन की ओर से नेपाल में हुई त्रासदी से प्रभावित एवं जरूरतमंद परिवारों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से काठमांडू से एक ट्रक राहत सामग्री रवाना किया गया। इसमें पीड़ित परिवारों के लिए आवश्यक राशन एवं अन्य राहत सामग्री शामिल है। अंतर्राष्ट्रीय समरसता मंच के संयोजक डॉ. कुलदीप प्रसाद शर्मा, एडवोकेट ने बताया कि संगठन की ओर से नेपाल के त्रासदी प्रभावित क्षेत्रों में लगातार राहत एवं सहायता कार्य किए जा रहे हैं। जगतगुरु शिव शक्ति बाबा के मार्गदर्शन एवं सहयोग से पीड़ित एवं जरूरतमंद परिवारों को राशन सामग्री उपलब्ध कराकर संगठन इस कठिन समय में उनके साथ खड़े रहने का प्रयास कर रहा है। इस अवसर पर मंच के प्रतिनिधिमंडल ने नेपाल संसद के स्पीकर श्री डी.पी. अयाल से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान इंडो-नेपाल समरसता ऑर्गनाइजेशन की आगामी कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा की गई तथा नेपाल में हुई त्रासदी पर संवेदना व्यक्त की गई। नेपाल के स्पीकर श्री डी.पी. अयाल ने संगठन की मानवीय पहल एवं आगामी कार्ययोजना की सराहना करते हुए अंतर्राष्ट्रीय समरसता मंच के संयोजक डॉ. कुलदीप प्रसाद शर्मा को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कठिन समय में पीड़ित परिवारों की सहायता के लिए मंच एवं उसके सदस्यों द्वारा किए जा रहे प्रयासों को सराहनीय बताया। राहत कार्य में मंच के ग्लोबल एम्बेसडर श्री सर्वेंद्रजीत सिंह, डॉ. तूहीना प्रकाश शर्मा, श्री प्रदीप राठी, श्री बी.एल. रणवा, डॉ. रणवीर यादव, श्री देवराज जैन, श्री शांतिनाथ जोशी, श्रीमती आशा डामोर, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा एवं श्री मूल सिंह नाथावत ने विशेष सहयोग प्रदान किया। मंच के काठमांडू संयोजक श्री सुभाष जैन ने बताया कि मंच के प्रेरक सदस्यों डॉ. महेंद्र वशिष्ठ, रामनाथ जी महाराज, श्री संदीप नेहरा, श्री सुरेश गुप्ता, श्री सुरेश पूनिया, श्री जगदीश भड़ाल, श्री मंजीत सिंह एवं श्री राम कुमार बैरवा ने त्रासदी प्रभावित परिवारों को संबल प्रदान करने के उद्देश्य से संगठन को आर्थिक सहयोग दिया। नेपाल संसद के स्पीकर ने मंच के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस कठिन परिस्थिति में संगठन के सदस्य सक्रिय रूप से राहत एवं सहायता कार्यों में जुटे हुए हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे मानवीय प्रयास नेपाल और भारत के बीच सामाजिक एवं मानवीय संबंधों को और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अपने सुख के बजाय दूसरों के सुख से अधिक दु:खी होता है मनुष्य : पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी

अपने पुण्य और पुरुषार्थ पर विश्वास रखें, साधना का प्रदर्शन नहीं, चित्त और चारित्र को संभालें : श्री विशुद्धसागर जी

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया

ऋषभोदय, ऋषभ विहार में विराजमान श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी गुरुदेव ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में व्यक्ति अपने दुःख से कम दुःखी होता है, लेकिन इस बात से अधिक दुःखी रहता है कि उसका पड़ोसी सुखी क्यों है, उसका भाई सुखी क्यों है। अधिकांशतः लोग दूसरों के सुख से दुःखी होते हैं। यदि व्यक्ति को सुखी जीवन जीना है तो उसे दूसरों से तुलना करने के बजाय अपने पुण्य और भाग्य पर दृष्टि रखनी चाहिए। श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी गुरुदेव के शिष्य श्रुत संवेगी श्रमण सुव्रत सागर जी महाराज ने यह जानकारी दी।

चोंच मिली है तो दाना भी मिलेगा

गुरुदेव ने कहा कि जीवन में अपने पुण्य पर विश्वास रखना

चाहिए। सभी का अपना-अपना पुण्य होता है। एक चींटी का भी अपना पुण्य होता है, उसे भी पेट भरने के लिए मीठा मिल जाता है। एक चिड़िया को चोंच मिली है तो उसके लिए चुगने को दाना भी उपलब्ध होता है। उन्होंने कहा कि सभी का अपना-अपना भाग्य और पुरुषार्थ होता है। न किसी का अपमान करें और न किसी को दुत्कारें। परस्पर एक-दूसरे का सहयोग करें। स्व-उपकार के साथ परोपकार की भावना रखें और अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान करें। गुरुदेव ने कहा कि कोई ईश्वर हमारा पेट नहीं भरता। हमारे भाग्य और पुरुषार्थ से ही जीवन चलता है। कोई भगवान हमारे कर्मों के कर्ता नहीं हैं और कोई देव हमें जीवन प्रदान नहीं करते। हम अपनी आयु के अनुसार जीवन जीते हैं। भाग्य प्रबल हो तो जंगल में भी मंगल हो जाता है।

प्रदर्शन नहीं, चित्त और चारित्र को संभालें

श्री विशुद्धसागर जी ने कहा कि साधक को अपनी साधना का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। उसे अपने चित्त और चारित्र को संभालने पर ध्यान देना चाहिए। जो व्यक्ति अपने चित्त को संभाल लेता है, उसका चारित्र भी संभल सकता है। साधना का वास्तविक उद्देश्य बाहरी प्रदर्शन नहीं, बल्कि भीतर के भावों का परिष्कार है।

श्री अभिषेक अशोक पाटील: कार्याध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद, कोल्हापुर

हीरों की चमक के बीच महिलाओं ने मनाया "ग्लोरी इन डायमंड" का यादगार उत्सव

जयपुर. शाबाश इंडिया। ह्यूमन ग्लोरी वूमेन्स क्लब की ओर से रविवार को एम.आई. रोड स्थित किसना डायमंड एंड गोल्ड ज्वेलरी में ''ग्लोरी इन डायमंड झ एन इवनिंग ऑफ एलिगेंस, एम्पावरमेंट एंड सेलिब्रेशन'' का भव्य आयोजन किया गया। हीरों की चमक, महिलाओं की मुस्कान और उत्साह से भरे माहौल में आयोजित इस कार्यक्रम ने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पूर्वा राणावत, Mrs. India Galaxy 2017, योग विशेषज्ञ एवं सामाजिक क्षेत्र से जुड़ी प्रतिष्ठित हस्ती रहीं। उन्होंने अपने प्रेरणादायक विचारों के माध्यम से महिलाओं को आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच और जीवन में निरंतर आगे बढ़ने का संदेश दिया। ह्यूमन ग्लोरी वूमेन्स क्लब की अध्यक्ष मनीषा जैन ''कुसुम'' ने सभी अतिथियों एवं सदस्यों का आत्मीय स्वागत करते हुए कहा कि क्लब का उद्देश्य महिलाओं को ऐसा मंच प्रदान करना है, जहां वे अपनी प्रतिभा को निखारते हुए आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ सकें। संस्थापक अध्यक्ष प्रमोद जैन भंवर ने बताया कि ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन एवं ह्यूमन ग्लोरी वूमेन्स क्लब समाजसेवा के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। ऐसे आयोजनों के माध्यम से महिलाओं को एकजुट करने, उनकी प्रतिभा को मंच देने और उनके आत्मविश्वास को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। कार्यक्रम में डांस, मनोरंजक गेम्स, स्वादिष्ट भोजन और आकर्षक उपहारों ने सभी का भरपूर मनोरंजन किया। डायमंड व्हाइट एवं रेड ड्रेस कोड में सजी महिलाओं ने कार्यक्रम की रौनक और बढ़ा दी। प्रतिभागियों ने विभिन्न गतिविधियों में पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में संतोष बंब, उपमा सारस्वत, अंजू गुप्ता, राजुल अग्रवाल, रचना बैद, ज्योति जैन, अर्चना, प्रीति जैन एवं अंजू अग्रवाल सहित क्लब की अन्य सदस्य उपस्थित रहीं।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की बांदीकुई खंड कार्यकारिणी का गठन

महावीर सिंह तंवर बने अध्यक्ष, नवीन कार्यकारिणी को दिलाई गई जिम्मेदारियां

बांदीकुई. शाबाश इंडिया

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ राजस्थान (विद्यालय शिक्षा), खंड बांदीकुई की साधारण सभा का आयोजन रविवार को राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, बांदीकुई में किया गया। इस दौरान खंड पालक एवं अतिरिक्त जिला मंत्री श्री राजेंद्र प्रसाद मीणा के सान्निध्य में खंड बांदीकुई की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। नवगठित कार्यकारिणी में महावीर सिंह तंवर को अध्यक्ष, अजय चतुर्वेदी को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, हेमराज गुप्ता को पुरुष उपाध्यक्ष, मनीषा गोयल को महिला उपाध्यक्ष, हनुमान प्रसाद शर्मा को मंत्री, ललित किशोर सैनी को कोषाध्यक्ष तथा सुनीता विजय को महिला मंत्री का दायित्व सौंपा गया। प्रतिनिधि सदस्यों के रूप में अध्यापक हरभजन गुर्जर, वरिष्ठ अध्यापक घनश्याम शर्मा, व्याख्याता प्रकाशचंद मीणा, प्राचार्य प्रसादी लाल सैनी, शारीरिक शिक्षक पवन राजोरिया, महिला शिक्षा सदस्य आशा बैरवा, प्रयोगशाला सहायक खेम सिंह गुर्जर, पुस्तकालय अध्यक्ष लोकेंद्र जाट, सेवानिवृत्त शिक्षक महेश शर्मा, प्रबोधक रामेश्वर प्रसाद गुर्जर, कंप्यूटर शिक्षक अरुण व्यास तथा पंचायत शिक्षक गिर्राज प्रसाद सैनी को दायित्व सौंपे गए। द्वितीय सत्र में जिला सह कार्यवाह नवीन कुमार ने ''संगठन में कार्यकर्ता की भूमिका एवं गुण'' विषय पर बौद्धिक व्याख्यान दिया। उन्होंने कार्यकर्ताओं को संगठन के प्रति निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। खंड पालक राजेंद्र प्रसाद मीणा ने नवीन कार्यकारिणी के सदस्यों को उनके दायित्वों के प्रति सजग रहते हुए संगठन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का आग्रह किया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य राधामोहन गुप्ता, पवन तांबी, आशीष तंवर, सियाराम गुर्जर, संतोष कुमार शर्मा एवं धर्मेंद्र शर्मा सहित अन्य उपस्थितजनों ने नवीन कार्यकारिणी के सदस्यों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

भिंड में ऐतिहासिक भुजरिया मिलन समारोह एवं सामूहिक भक्तामर पाठ का भव्य आयोजन

करीब 120 सदस्य परिवारों ने लिया सहभागिता, धर्म और सामाजिक एकता का दिया संदेश

भिंड. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के अंतर्गत चंबल रीजन के भिंड जिले के सभी दिगंबर जैन सोशल ग्रुपों को एक सूत्र में जोड़ने के उद्देश्य से दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सिटी भिंड की ओर से शनिवार, 29 अगस्त 2026 को शाम 7 बजे श्री दिगंबर जैन महावीर कीर्ति स्तंभ मंदिर, लश्कर रोड, भिंड में ऐतिहासिक भुजरिया मिलन समारोह एवं सामूहिक श्री भक्तामर पाठ का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक श्री भक्तामर पाठ एवं आरती के साथ हुआ। पाठ के उपरांत उपस्थित पदाधिकारियों, सदस्यों एवं परिवारजनों ने एक-दूसरे को गले मिलकर भुजरिया मिलन की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई दीं। इस दौरान मंदिर परिसर प्रेम, सौहार्द, अपनत्व एवं भाईचारे की भावना से सराबोर हो उठा। इस अवसर पर भिंड जिले के दिगंबर जैन सोशल ग्रुप ''सीनियर सिटीजन मेन'', 'अजितनाथ' एवं 'सार्थक' के सम्माननीय पदाधिकारी एवं दंपती सदस्य सहित सिटी भिंड परिवार के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में करीब 120 सदस्य परिवारों ने सहभागिता की। यह आयोजन केवल धार्मिक कार्यक्रम तक सीमित न रहकर विभिन्न ग्रुपों एवं परिवारों को एक सूत्र में जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण एवं सराहनीय पहल साबित हुआ। संस्था सचिव अंशुल आयशा जैन ने कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों एवं परिवारजनों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने आयोजन में मिले सहयोग एवं स्नेहपूर्ण सहभागिता के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के बाद सुमित रिंकी जैन (रानीपुर वाले) एवं ऋषभ सोनम जैन (रानीपुर वाले) की ओर से सभी अतिथियों एवं परिवारजनों के लिए वात्सल्यपूर्ण स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई। इससे पूर्व कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों का संस्था अध्यक्ष शैलेंद्र पूनम जैन, कोषाध्यक्ष रविंद्र सुधा जैन, शिरोमणि संरक्षक एवं राष्ट्रीय निदेशक मंडल सदस्य अशोक जया जैन, राष्ट्रीय निदेशक मंडल सदस्य अतुल ज्योति जैन सहित दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सिटी भिंड के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने हाथ जोड़कर आत्मीय स्वागत किया। कार्यक्रम के माध्यम से सभी ने धर्म, भक्ति एवं सामाजिक एकता के साथ आपसी प्रेम और भाईचारे को निरंतर मजबूत करने का संकल्प लिया। भुजरिया मिलन समारोह ने भिंड जिले के दिगंबर जैन सोशल ग्रुप परिवारों के बीच अपनत्व, सौहार्द एवं एकता की सुंदर मिसाल प्रस्तुत की।

आरबीएल बैंक अधिकारियों के साथ महासमिति की शिष्टाचार भेंट

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन महासमिति राजस्थान अंचल के महामंत्री श्री महावीर कुमार बाकलीवाल ने बताया कि श्री निर्मल कुमार संघी के संयोजन में महावीर नगर स्थित श्री सुरेंद्र कुमार पांड्या के कार्यालय में आरबीएल बैंक के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आत्मीय एवं सार्थक शिष्टाचार भेंट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आरबीएल बैंक के श्री अभिषेक चतुर्वेदी, TASC हेड, राजस्थान, श्री समीर सिंह चौहान, ब्रांच मैनेजर, टोंक रोड एवं श्री मोहित नेगी, सिग्नेचर रिलेशनशिप मैनेजर उपस्थित रहे। बैंक अधिकारियों ने बैंक की विभिन्न सेवाओं एवं सुविधाओं के संबंध में विस्तार से जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में दिगंबर जैन महासमिति के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेंद्र कुमार पांड्या, माननीय न्यायाधीश श्री नरेंद्र कुमार जैन, राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री अनिल कुमार जैन, IPS तथा कोषाध्यक्ष श्री रमेश कुमार सोगानी की गरिमामयी उपस्थिति रही। बैंक अधिकारियों ने आरबीएल बैंक की कार्यप्रणाली, बैंकिंग सुविधाओं एवं विभिन्न सेवाओं की विस्तृत जानकारी दी। साथ ही महासमिति एवं बैंक के बीच आपसी सहयोग, समन्वय एवं भविष्य में उपयोगी सहभागिता की संभावनाओं को लेकर सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण विचार-विमर्श हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण एवं आत्मीय वातावरण में सम्पन्न हुआ। उपस्थित पदाधिकारियों ने शिष्टाचार भेंट को ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी बताते हुए इसे भविष्य में आपसी सहयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया।

कार्यकर्ताओं का सम्मान समारोह सम्पन्न

मंदिर निर्माण एवं वेदी प्रतिष्ठा समारोह को सफल बनाने वाले कार्यकर्ताओं का किया सम्मान

झुमरीतिलैया. शाबाश इंडिया। जैन मंदिर के भव्य पंडाल परिसर में मंदिर निर्माण कमेटी की ओर से मंदिर निर्माण एवं वेदी प्रतिष्ठा समारोह को सफल बनाने में विशेष सहयोग देने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत गुरुदेव मुनि श्री 108 सुयश सागर जी मुनिराज के सान्निध्य में संध्याकालीन णमोकार चालीसा के साथ हुई। इसके बाद मुनिश्री ने सभी कार्यकर्ताओं को मंगल आशीर्वाद देते हुए कहा कि यहां के युवाओं में अपार शक्ति है। वे जिस कार्य को हाथ में लेते हैं, उसे ऐतिहासिक बना देते हैं। उन्होंने विरागोदय वर्षायोग कमेटी, मंदिर निर्माण कमेटी के सदस्यों तथा समाज के सभी पदाधिकारियों को भी मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इसके पश्चात जैन मंदिर वेदी प्रतिष्ठा समारोह के अंतर्गत दिल्ली से आई सौरभ जैन नाट्य मंडली की ओर से सामाजिक कुरीतियों पर आधारित नाट्य मंचन किया गया। समाज के सैकड़ों लोगों ने नाट्य प्रस्तुति की सराहना की। कार्यक्रम में टीवी धारावाहिकों में कार्य कर चुके कई कलाकारों ने भी हिस्सा लिया और अपनी सजीव प्रस्तुति से दर्शकों का मन मोह लिया। मंदिर निर्माण कमेटी के संयोजक सुरेश जैन झाझंरी एवं सुशील जैन छाबड़ा ने समाज के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने विशेष रूप से कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने वाले कार्यकर्ताओं की सराहना करते हुए उन्हें सम्मानित किया। मंदिर निर्माण के सहसंयोजक विवेक जैन सेठी, अभिषेक जैन गंगवाल एवं प्रवीण जैन पाटनी, शिलान्यास कार्यक्रम के संयोजक ललित जैन सेठी एवं मनीष जैन सेठी तथा सहयोगी सदस्य प्रदीप जैन छाबड़ा एवं अतुल जैन छाबड़ा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गोलोक धाम गोवंश के लिए पूर्ण अभयारण्य के रूप में विकसित होगा : आचार्य प्रज्ञा सागर जी महाराज

जैन पत्रकार महासंघ के प्रतिनिधिमंडल ने किया नवनिर्मित गोलोक धाम का भ्रमण

जयपुर. शाबाश इंडिया

परम पूज्य भगवान महावीर तपोभूमि, उज्जैन के प्रणेता आचार्य श्री प्रज्ञा सागर जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से निमोड़िया, चाकसू में नवनिर्मित गोलोक धाम को गोवंश के लिए पूर्ण अभयारण्य के रूप में विकसित किया जा रहा है। आचार्य श्री ने कहा कि यह परियोजना केवल एक गौशाला नहीं है, बल्कि गोवंश के संपूर्ण जीवन चक्र और उसके महत्व को समाज तक पहुंचाने का प्रयास है। इसे आत्मनिर्भर मॉडल के रूप में विकसित करने की योजना है। यहां जैविक खेती, गोबर से खाद निर्माण, गोमूत्र आधारित उत्पाद तथा दुग्ध उत्पादन से संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाएगा। जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने बताया कि 29 अगस्त को प्रातः 10 बजे जैन पत्रकारों का एक प्रतिनिधिमंडल राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया के नेतृत्व में जयपुर से गोलोक धाम, निमोड़िया पहुंचा। प्रतिनिधिमंडल ने आचार्य श्री के दर्शन कर श्रीफल अर्पित किया तथा श्रमण संस्कृति की रक्षा का संकल्प लेकर रक्षा सूत्र बंधवाया। प्रतिनिधिमंडल ने गौशाला एवं संपूर्ण परिसर का अवलोकन किया तथा गायों को चारा खिलाया। निर्माण कार्य एवं वहां संचालित गतिविधियों की जानकारी लेने के बाद प्रतिनिधिमंडल ने गोलोक धाम समिति के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया ने कहा कि गोलोक धाम सड़क पर भटकने वाली, बीमार एवं बेसहारा गायों के लिए सुरक्षित आश्रय स्थल है। जैन समाज एवं विभिन्न संस्थाओं को ऐसे परोपकारी कार्यों में सहयोग कर गोवंश संरक्षण को बढ़ावा देना चाहिए। जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिलीप जैन ने कहा कि यह सभी के लिए पुण्य का अवसर है कि उन्हें ऐसे सुंदर एवं सेवा-समर्पित स्थान के दर्शन एवं अवलोकन का अवसर मिला। उन्होंने बताया कि इस दौरान आचार्य श्री की ओर से आयोजित पूजा एवं हवन में शामिल होने के साथ ब्रह्मचारी दर्शन जी की गोद भराई रस्म में भी शामिल होने का अवसर मिला। ब्रह्मचारी दर्शन जी आगामी 1 नवंबर 2026 को तुमकुरु (कर्नाटक) में आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज से जिनदीक्षा ग्रहण करने जा रहे हैं। इस अवसर पर गोलोक धाम सेवा समिति के अध्यक्ष देवेंद्र जैन निमोड़िया तथा छोटा गिरनार, बापूगांव के अध्यक्ष प्रकाशचंद बाकलीवाल एवं पदाधिकारियों ने उपस्थित पत्रकारों और एक दिन के चातुर्मास पुण्यार्जक समाजश्रेष्ठी चेतन जैन, केकड़ी परिवार का तिलक, माला, दुपट्टा एवं साफा पहनाकर सम्मान किया। प्रतिनिधिमंडल में रमेश जैन तिजारिया, उदयभान जैन, दिलीप जैन, बलवंत राज मेहता, ज्ञानचंद पाटनी, सुरेंद्र कुमार जैन बड़जात्या, अरुण जैन, शुभम जैन, अनीष जैन, नीलम जैन (दिल्ली) एवं अनीता बड़जात्या (जयपुर) सहित अन्य पत्रकार शामिल रहे। राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने बताया कि पूज्य आचार्य श्री के सान्निध्य में आगामी नवंबर माह में पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। साथ ही आचार्य श्री से 30 सितंबर को रायपुर (छत्तीसगढ़) में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय पत्रकार सम्मेलन के लिए भी आशीर्वाद प्राप्त किया गया। उपस्थित पत्रकारों ने रायपुर राष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल होने की सहमति जताई तथा देशभर के जैन पत्रकारों से सम्मेलन में अधिकाधिक संख्या में पहुंचने का आग्रह किया।

प्रेषक : उदयभान जैन, जयपुर
मोबाइल : 9414306696